स्वास्थ्य संचार

कोविड नाटक

डॉ अरविन्द कुमार सिंह

कोविड नाटक

कोरोना काल के विज्ञान नाटक

मार्गदर्शन

श्री सुजीत बनर्जी

वैज्ञानिक 'ई' राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार नई दिल्ली

लेखक

डॉ अरविन्द कुमार सिंह

निर्माण

डॉ अनूप चतुर्वेदी

डिजाईन

श्री रवि अग्रवाल

प्रकाशक

इंडियन साइंस कम्युनिकेशन सोसाइयटी

चन्द्रिका भवन, 577-डी निकट डंडहिया मस्जिद , लखनऊ -226022, भारत

iscos.org; info@iscos.org; +91-8090907153

© 2021 सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN

प्रथम संस्करण : 2021

COVID DRAMA - Science Dramas of Corona Times

प्रस्तावना

करोना वायरस के कारण उत्पन्न कोविड बीमारी का खतरा पूरे विश्व में लगातार बना हुआ है। इससे बचाव के लिए पूरी दुनिया में यथासंभव उपाय किये जा रहे हैं। करोना बीमारी को नियंत्रित करने के लिए लॉकडाउन एक प्रभावी उपाय तो रहा है, लेकिन पिछले साल एक लंबे समय तक लॉकडाउन होने के कारण से लोगों को होने वाले कष्ट को ध्यान में रख करके इस प्रकार के उपाय को हमेशा और लंबे समय तक नहीं किया जा सकता है। सरकार कोविड से बचाव हेतु लॉकडाउन जैसे उपाय से यथासंभव बचना ही चाहती है क्योंकि इससे लोगों के समक्ष रोजी रोटी का संकट खड़ा हो जाता है। एक बार जब लॉकडाउन होता है तो उससे पूरे देश समाज में कई तरह से प्रभाव पड़ता है। प्रवासी मजदूर घर की ओर लौटने लगते हैं। वहीं पर परिवहन के जो साधन होते हैं, वे सब बंद होने लगते हैं । अत: करोना बीमारी से बचने के लिए अन्य उपाय को अपनाना अति आवश्यक है ।

कोविड बीमारी अप्रत्याशित रूप से सामने आई है । इसके संदर्भ में तमाम ऐसी बातें हुई हैं जिससे कि काफी परेशानी हो रही है। उदाहरण के लिए नये कोरोना वैरीअंट के साथ कई ऐसे भी मामले आए हैं, जिसमें कि आरटीपीसीआर परीक्षण में तो रिपोर्ट नकारात्मक आते हैं, पर सीटी स्कैन के बाद मरीज सकारात्मक पाए जा रहे हैं । इस बीमारी ने चारों तरफ एक निराशा का वातावरण भी पैदा किया। किंतु हमें सतत् एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना है और इस स्थिति में धैर्य और विवेक से ही काम लेने की आवश्यकता है। यदि हम स्वयं से हार जाएंगें, तब तो पराजय ही निश्चित है। अत: हर प्रकार से सकारात्मक भाव बनाये रखना है।

सामान्य स्थिति में सुखी बने रहना तो आसान है, किंतु जब किसी प्रकार की आपदा आई हो, तो उस समय धैर्य और सहनशक्ति से कार्य करना बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है। कोविड के नियंत्रण में व्यापक टीकाकरण कार्यक्रम सबसे महत्वपूर्ण है । यह भी कहा जा रहा है कि यदि जनसंख्या के बड़े भाग को कोविड का टीका लगा दिया जाए, तो देश में कोविड का प्रभाव कम हो जाएगा और दुनिया के कई देश इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं । इसलिए हमारे देश में भी टीकाकरण को व्यापक स्तर पर करने की आवश्यकता है। इस समय यह कार्य बहुत ही तीव्र गति से किया भी जा रहा है।

यह भी एक सुखद बात रही है कि सरकार ने दुनिया के सभी मुख्य कोविड टीकों को भारत में लगाने की मंजूरी दे दी है। उससे टीकाकरण की प्रक्रिया तेज गति से होने लगी है । अमेरिकी सरकार ने तो करोना के भयावह स्थिति को ध्यान में रखते हुए इसे बौद्धिक संपदा अधिकार के दायरे से बाहर रखने की बात कही है। यह भी बहुत ही मानवीय पहल है और इससे टीकाकरण की प्रक्रिया पूरी दुनिया में तेज होने की उम्मीद की जा सकती है।

टीकाकरण की प्रक्रिया में सरकार अपने स्तर से हर तरफ से प्रयास कर रही है । किंतु यह आम जनता का भी दायित्व है कि वह इस कार्य को सही ढंग से संपन्न कराने में अपने स्तर से किए जा सकने वाले हर संभव सहयोग करें।

टीकाकरण को ले करके कुछ लोगों में अभी भी कई तरीके का संकोच भी है। बहुत से लोगों के बीच में तो टीकाकरण को लेकर अंधविश्वास भी फैला हुआ है। इसको लेकर व्याप्त तरह-तरह के भ्रांतियो को दूर करने की आवश्यकता है। हालाँकि पहले की तुलना में अब यह भ्रॉति काफी हद तक कम हुई है। पहले टीका लगने से नुकसान की भी बात कही जाती रही है। जबकि ऐसी कोई गंभीर शिकायत अभी तक नहीं आई है और अगर किसी भी प्रकार की कोई शिकायत मिली भी है, तो उसकी संख्या नगण्य है। कोई भी दवा हर तरीके से निरापद नहीं होती है।

कोविड बीमारी से निपटने एवं टीकाकरण हेतु समाज में व्यापक जन जागरण की आवश्यकता है। इस तथ्य को ध्यान में रख करके कई स्तरों से लगातार प्रयास भी किये जा रहे है। विविध प्रकार की जनजागरण सामग्री तैयार की जा रही है। इसके माध्यम से कोविड बीमारी का सही प्रकार से सामना करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए डॉक्टर अरविन्द कुमार सिंह द्वारा कोविड विषय पर तैयार की गई ई पुस्तक 'कोविड नाटक' एक बहुत ही उपयोगी पुस्तक है। इस पुस्तक में कोविड बीमारी के विविध पक्षों पर नाटक के रूप में रोचक ढंग से बातें कही गयी है। हम उम्मीद करते हैं कि जन सामान्य में तो यह विशेष तौर पर लोकप्रिय होगी और कोविड बीमारी से बचाव करने के लिए जनजागरण पैदा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। मैं अपनी तरफ से डॉक्टर अरविन्द कुमार सिंह को इस प्रयास के लिए बधाई देता हूँ। उन्होंने अत्यन्त मनोयोग से इस पुस्तक को तैयार किया है जिससे कि लोगों में कोविड बचाव के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो। हमें पूर्ण विश्वास है कि इसका आम लोगों के बीच मंचन भी किया जायेगा और लोगों पर सकारात्मक परिणाम पड़ेगा।

डा० राजेन्द्र प्रसाद

पूर्व विभागाध्यक्ष
किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी
लखनऊ

लेखक की बातें

प्रस्तुत पुस्तक कोविड की पृष्ठभूमि में लिखी गयी है। कोविड बीमारी वर्तमान समय की एक बहुत बड़ी त्रासदी रही है। इसके सन्दर्भ में साहित्य जगत की विविध विधाओं में विभिन्न प्रकार की रचनाएं की गयी हैं। इस पुस्तक में सभी रचनाएं ड्रामा की विधा में हैं। ड्रामा या नाटक हमारे जीवन को दर्शाने का एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। कोविड के परिप्रेक्ष्य में बहुत बड़ी संख्या में जो साहित्य सृजन हआ है, उसमें नाटक विधा में लिखा साहित्य भी शामिल है। इसलिए इस विधा पर भी कुछ चर्चा कर लेना उचित है।ड्रामा कथा प्रस्तुति का एक खास प्रकार है जो कि थियेटर, रेडियो, टीवी या फिर डिजिटल माध्यम पर प्रस्तुत किया जाता है। नाटक में घटनाओं को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसमें व्यक्ति किसी वास्तविक या फिर काल्पनिक घटना को इस ढंग से प्रस्तुत करता है कि वह सामने घटित होता प्रतीत हो। ड्रामा के माध्यम से जीवन की घटनाओं को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसके कई प्रकार के फायदे भी हैं। यह लोगों के स्वभाविक झिझक को भी खत्म करता है और उनके आत्मविश्वास को बनाता है। ड्रामा के बारे में यह भी कहा जाता है कि इससे एकाग्रता बनती है और लोग एक दूसरे के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं। नाटक स्वयं अपने आप में एक भाषा है और यह लोगों की भाषा एवं संचार कुशलता को विकसित करता है। इसके माध्यम से किसी बात को कहीं अधिक प्रभावी तरीके से कहना संभव हो पाता है। व्यक्ति मुख से एवं हाव-भाव दोनों तरीके से सन्देश संचारित करता है और इस तरीके से वह एक अच्छा संचारक बनता है।

ड्रामा की एक अन्य विशेषता यह भी है कि यह लोगों में एक दूसरे से सहयोग करने के गुण को भी विकसित करता है। नाटक में साथ-साथ काम करना, गीत गाना एवं अन्य क्रिया कलाप ऐसे होते हैं जो एक दूसरे की मदद करके किए जाते हैं । यह भाव आगे चल करके सहयोग के भाव के रूप में विकसित होता है। नाटक के माध्यम से किसी भी घटना एवं परिवेश को दर्शाया जाता है और सही तरीके से यदि इसे प्रस्तुत किया जाता है तो लोगों को उस घटना एवं परिवेश को कहीं बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलती है। किसी बात को लोगों को सीधे साधे शब्दों में यदि बताया जाता है तो उस स्थिति में वे उसे अच्छी तरीके से नहीं समझ पाते हैं। नाटक भावनात्मक अपील करने की भी क्षमता रखता है। इसके माध्यम से कलाकार अधिक से अधिक स्वाभाविक एक्टिंग करके किसी बात को कहता है। उसमें एक्टिंग की जितनी कला होती है, उतना ही सशक्त ढंग से वह दर्शकों पर प्रभाव भी डालता है। ड्रामा फिजिकल रूप में भी लोगों का विकास करता है। ड्रामा में एक्टिंग करते समय लोगों को भी विविध प्रकार के क्रिया कलाप करने पड़ते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि उनका शारीरिक अभ्यास भी होता है। ड्रामा क्रिएटिविटी को भी विकसित करता है। किसी भी प्रकार के घटनाक्रम प्रस्तुत करने के लिए कलाकार को किसी भी रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना होता है तो यह सब कार्य करने के लिए उसमें क्रिएटिविटी होना आवश्यक है। जब कलाकार के समक्ष इस तरह की चुनौती होती है, तो वह अपनी क्रिएटिविटी को और अधिक विकसित करता है।

से हम कह सकते है कि सम्पूर्ण जीवन ही इस प्रकार से चलता रहता है जिसमें कि एक एक घटना ड्रामें के रूप में ही घटित होती रहती है। इसे एक नाटक के विविध प्लाट के तौर पर देखा जा सकता है।

इस समय पूरी दुनियॉ में कोरोना बीमारी का संकट बना हुआ है। इससे पूरी दुनिया में लाखों लोगों की मौत हुई है और जितनी अधिक संख्या में लोग संक्रमित हुए हैं, उसे देख करके यह आवश्यक है कि इस बीमारी के सभी पहलूओं के बारे में गंभीरता से जॉच किया जाये और भविष्य में इस प्रकार के संकट से बचने के लिए क्या किया जाना चाहिए, उसके बारे में एक व्यापक स्तर पर रणनीति बनाने का प्रयास किया जाये।

फिलहाल वर्तमान में जो स्थिति है, उसे देखते हुए अभी इस बीमारी का सामना करने के लिए लोगों में जागरूकता उत्पन्न करना अतिआवश्यक है। इसके लिए विविध प्रकार के तरीके अपनाये जा सकते हैं। आम जन को विविध जनमाध्यमों से इसके बारे में लगातार बताया जा रहा है। इसमें कोविड से बचाव करना ही मुख्य है, जिसके लिए कुछ खास प्रकार के तौर तरीके भी बताये गये हैं।

इस क्रम में नाटक द्वारा कोविड के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए विविध घटनाओं को ले करके उसे नाटक के माध्यम से कहने का विचार उत्पन्न हुआ। इसी को ध्यान में रख करके प्रस्तुत पुस्तक इस पुस्तक में कोविड बचाव के विविध पक्षों के साथ ही उचित खान है।
पान एवं विभिन्न समस्याओं का कैसे सामना करता है, उसे ले करके नाटक लिखे गये हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि इससे लोगों को कोविड के बारे में और अधिक करीब से जानने का मौका मिलेगा और वे उसका सामना करने के लिए प्रयास करेगें।

— डॉ० अरविन्द कुमार सिंह

विषय सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	दूर से करें नमस्ते	02
2	बनेगी कोविड फिल्म	06
3	कोविड का आगमन	13
4	टीके के बाद न हो लापरवाही	17
5	कोविड हथियार	20
6	करोना ठग	23
7	कोविड कवि सम्मेलन	29
8	करोना काढ़ा	38
9	कोविड पोस्टर	41
10	बचें भ्रामक विज्ञापन से	45
11	करोना की कविता	49
12	करोना क्लास	59
13	नुक्कड़ पर कोविड चर्चा	66
14	कोविड मुक्तक	77

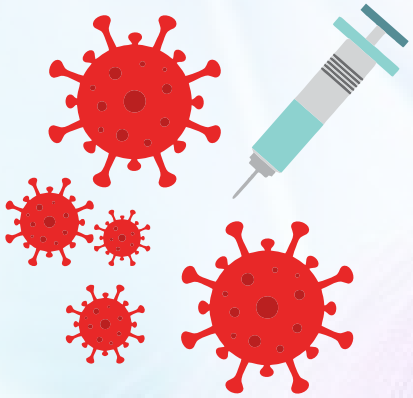

दूर से करें नमस्ते

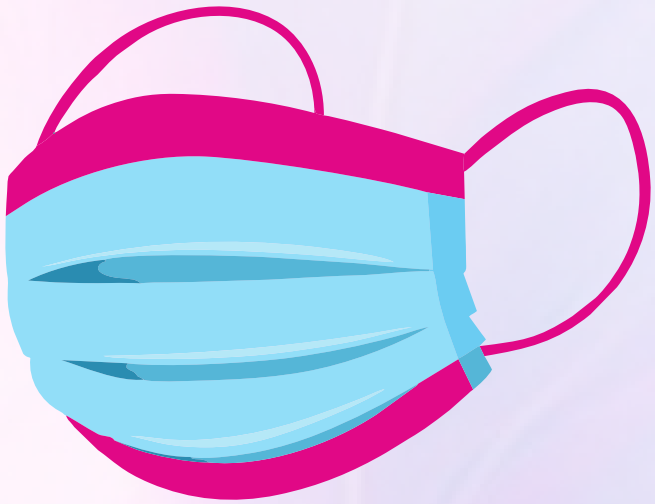

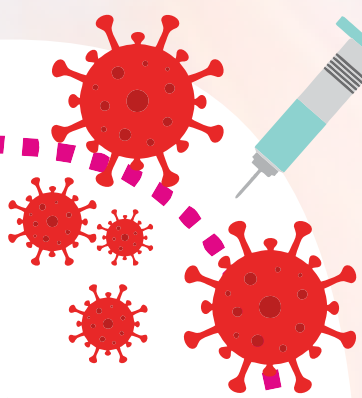

(कथा सार - रघु और भग्गू की मुलाकात काफी समय बाद होती है। भग्गू गले मिलने के लिए आगे बढ़ते हैं, किंतु रघु उन्हें ऐसा करने से मना कर देते हैं। इस पर भग्गू कहते हैं कि अच्छा चलो हाथ मिला लेते हैं। किंतु रघु उसे भी मना कर देते हैं। तब भग्गू बुरा मान जाते हैं। लेकिन जब रघु इसका कारण करोना वायरस का संक्रमण की आशंका बताते हैं, तो भग्गु को उनकी बात समझ में आ जाती है। वह बहुत ही खुश होते है और फिर रघु को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं)

दृश्य वर्णन - रघु और भग्गु दोनों रास्त में एकाएक आमने सामने मिलते हैं। फिर वे आपस में बातचीत करते हैं।

भग्गू- नमस्कार! आप लोगों को भाई !

आम दर्शक - नमस्कार!

भग्गू- बहुत खुशी हुई आप लोगों से मिलकर, ।
खिल गया चेहरा आप सभी को देखकर ।
पर कोविड की ऐसी चली है बीमारी ।
अब छूट गयी है, सब दोस्ती यारी ।

मेरा एक साथी रघु नही है दिखता ।
बहुत दिन बीता, है कहाँ वह रहता ।

(तभी रघु आते दिखायी देते हैं। उसे देख करके भग्गु खुश हो जाते हैं और कहते हैं)

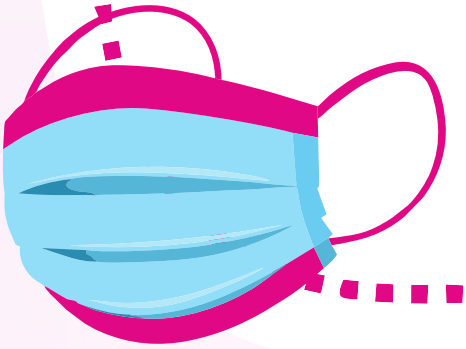

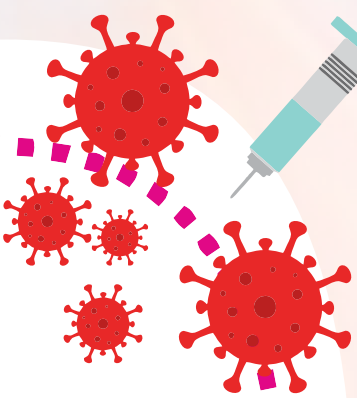

भग्गू- बहुत दिनों के बाद हो दिखते।
आओ ! चलो हम गले हैं मिलते।

रघु - नहीं भैया!
करोना की है चली बीमारी।
मिलना गले पड़ेगा भारी।

भग्गू - अच्छा!
बात है ऐसी तो चलो आएं।
आपस में हम हाथ मिलाएं।

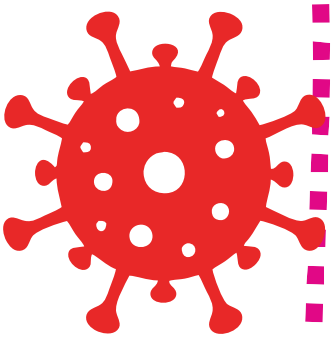

रघु - नहीं नहीं ,मैं नहीं हूँ आता।
इसमें भी संकट हो जाता।

भग्गू - (नाराज होते हुए)

तो कैसे हैं अभिवादन करना ?
क्या है तुम्हारा इस पर कहना ?

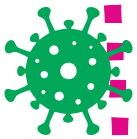

रघु- जब भी मिले ऑफिस या रास्ते।
दूर से हाथ जोड़ करें नमस्ते।

खतरा जब तक कोविड का है।
हम सबको यही ढंग अपनाना है।

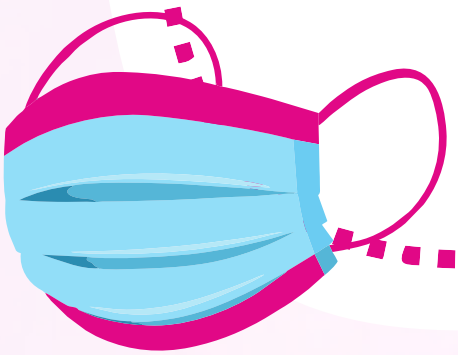

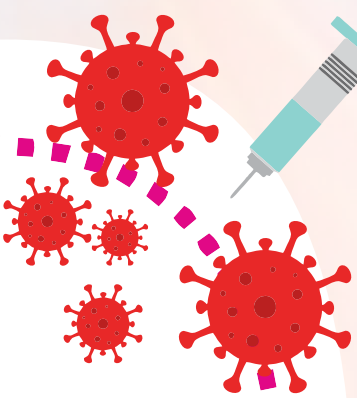

भग्गु - बहुत-बहुत धन्यवाद, रघु भाई।
तुमने बहुत अच्छी बात बताई।

(भग्गु दर्शकों को सम्बोधित करते हुए)

आप सभी यही ढंग अपनायें।
कोविड से खुद को बचायें।

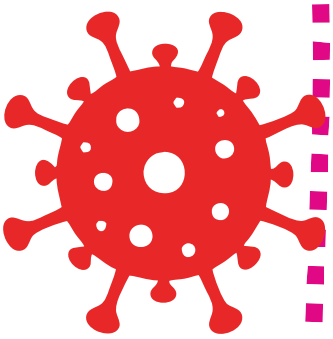

रघु- (हाथ जोड़कर) अच्छा तो अब चले, नमस्ते!

भग्गु - (हाथ जोड़कर) मेरा भी है तुम्हें नमस्ते!

(पीछे से समूह में बोला गया नारा)

जब भी कोई मिले रास्ते, बस दूर से उसे करें नमस्ते।
कोविड में पास न आये,बचाव का सब उपाय अपनाये।

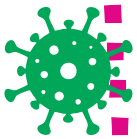

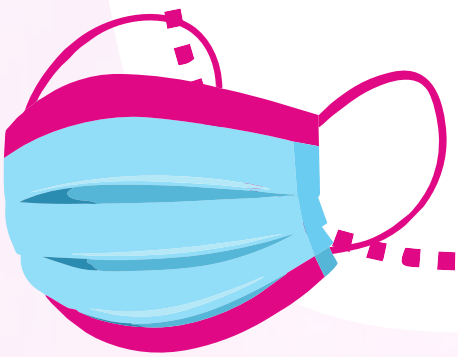

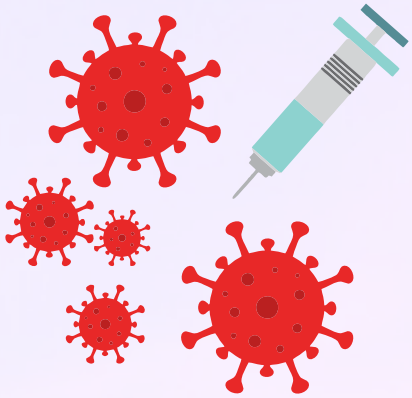

बनेगी कोविड फिल्म

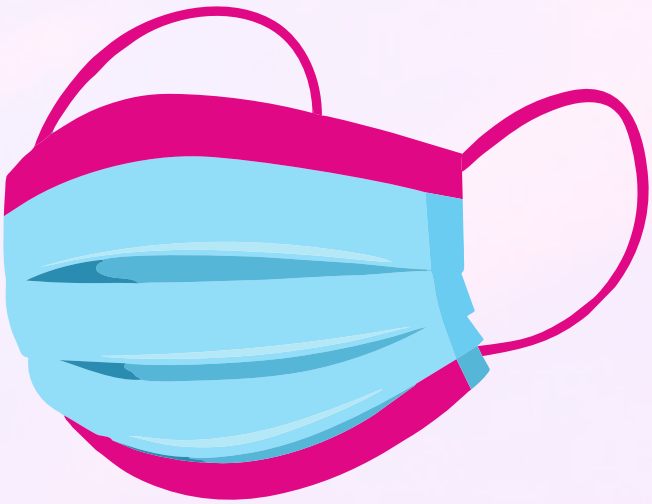

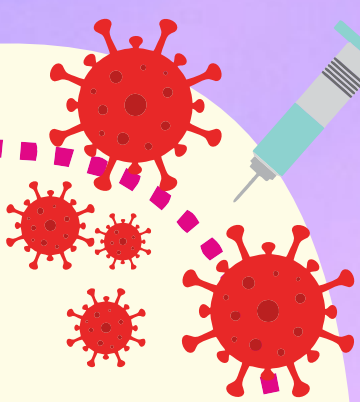

(कथा सार - रघु कोविड पर एक फिल्म बनाने जा रहे हैं। भग्गु को उस फिल्म निर्माण के बारे में जानकारी मिलती है तो वह कोविड पर बनाए जाने वाली फिल्म के बारे में पूछताछ करते हैं। इसी को ले करके उनके बीच होने वाले संवाद को यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है।)

दर्शक - राम राम। राम राम।

रघु - वह देखो, मेरा दोस्त आ रहा, आते हैं वह मेरे काम।
जोर से बोलो राम राम, राम राम। भई राम राम।

भग्गू - रघु भैया! नमस्कार !

रघु - भग्गु भाई! नमस्कार! कैसा चल रहा है कारोबार ?

भग्गू - अरे भैया!

रघु - हाँ भैया! मैंने सोचा है, एक अच्छी फिल्म बनाने की।
होगा कोविड नाम उसका,उद्देश्य जागरूकता लाने की।

भग्गू (चौंक कर) - लोगों में जागरूकता लाने की ?
कोविड के बारे में बताने की ?

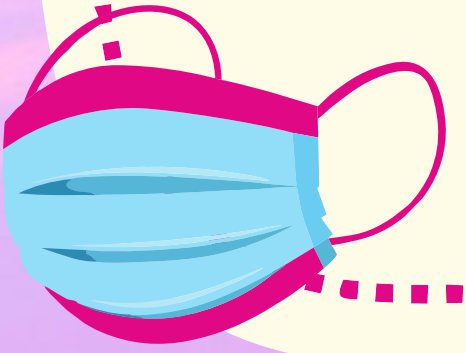

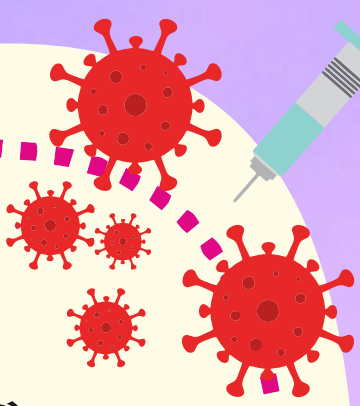

रघु - हाँ भैया! इस समय बीमारी कोविड आपदा भारी है।
लोग बहुत बीमार हो रहे हैं, ऐसी बनी लाचारी है।

भग्गू - तो यह बताओं कि -

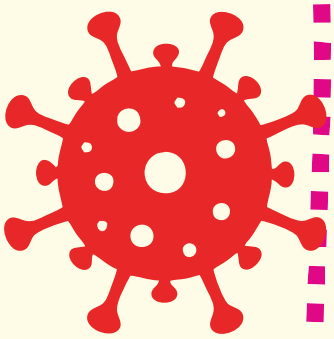

कौन-कौन कलाकार तुम लोगे ?
और कहाँ कहाँ शूटिंग होगी ?
कौन लिखेगा स्क्रिप्ट इसकी ?
यह फिल्म कैसे पूरी होगी ?

रघु -(बहुत ही शान्त भाव से)

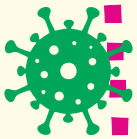

देखो भैया! फिल्म कलाकार तो,
लोगों के बीच से ही लिए जाएंगें।
मास्क पहनेंगे सब अपने मुख पर।
और सैनीटाइजर भी हाथ लगाएंगे।

आपस में दूरी भी रखेंगें।
फिर मिल कर फिल्म बनायेंगें।
कोविड में क्या हो सावधानी,
उन सब बातों को इसमें दिखायेंगें।

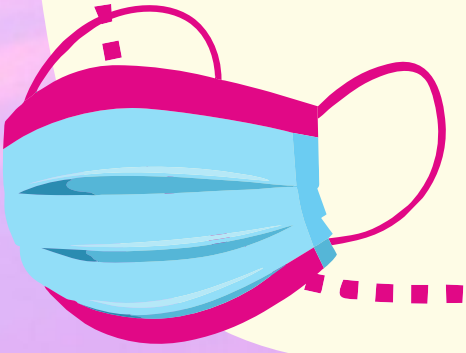

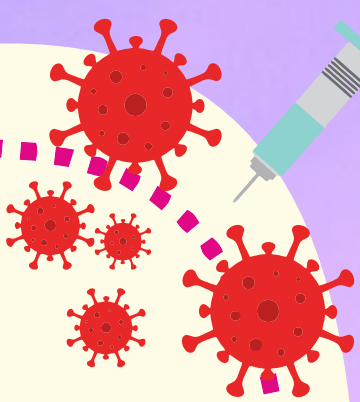

भग्गू - यह तो एक बहुत अच्छी है बात।
इस काम में तो मेरा भी है साथ।
अगर कहो तो हम भी कोई रोल करें।
इसी बहाने इसमें अपना सहयोग करें।

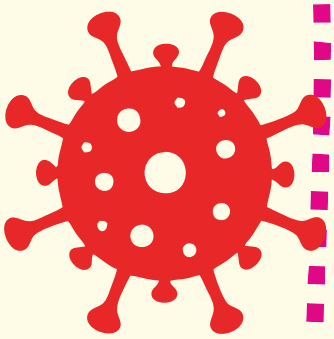

रघु - यह प्रस्ताव तुम्हारा अच्छा।
इस पर अवश्य होगा विचार।
अभी जो काम हम कर रहे,
उसका और सुनो समाचार।

हमीं लिखेंगे स्क्रिप्ट इसकी
वही सब कुछ बात बताएंगे।
कहाँ जरूरत किसकी होगी?
अब डॉक्टर जी उसे सुनायेंगे।

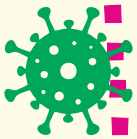

भग्गू - जब डाक्टर जी उसे दिखायेंगे !
तो फिर क्या क्या बात बतायेंगे?

(इसी बीच डॉक्टर साहब सामने आते दिखायी देतें है।
और वह कोविड पर बनने वाली फिल्म के बारे में बता रहे हैं।)

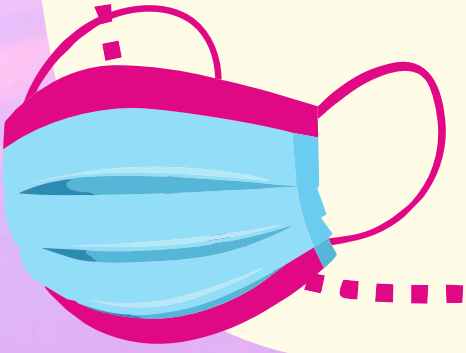

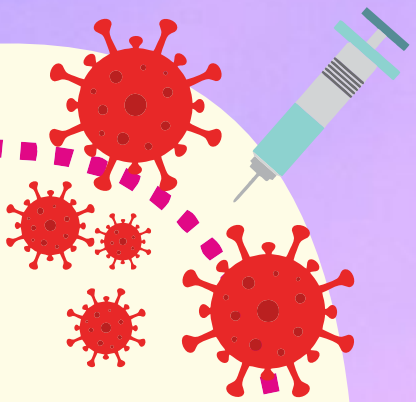

डॉक्टर -
हॉ!,हॉ! जो हम फिल्म बनायेगें।
अब तुम्हे उसकी कथा सुनायेगें।

देखो जो यह जो फिल्म बन रही।
यह जंन जागरूकता लाएगी।
कोविड में कैसे और क्या करना है,
ये सब बातें सभी कों बताएगी।

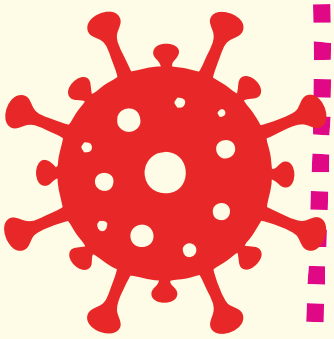

भग्गु - अच्छा!

यह तो बहुत ही सुन्दर होगा काम।
इससे तो आप सबका होगा नाम।

डॉक्टर -

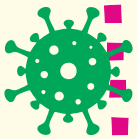

आएगी जागरूकता उनमें,
वे सब सावधान हो जाएंगे।
पालन करेंगे स्वास्थ्य के नियम,
कोविड से बच जाएंगे।

भग्गु- तो अब यह बात बताइये,
इसे अच्छी तरह समझाइये।

कौन सा नियम स्वास्थ्य का होगा ?
क्या सबको पालन करना होगा ?

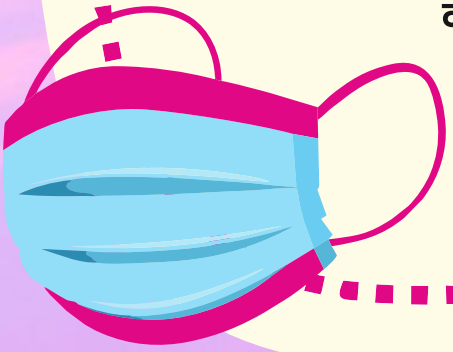

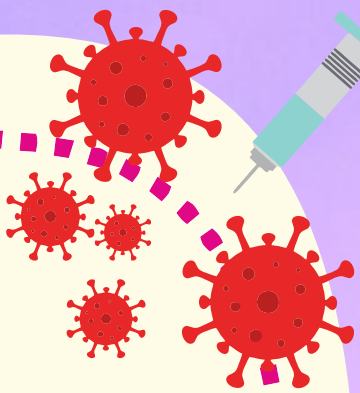

डॉक्टर साहब -
मास्क पहनना सबको है, फिल्म में इसे दिखाएंगें।
है रहना दो गज की दूरी पर, इसका गाना गाएंगे।

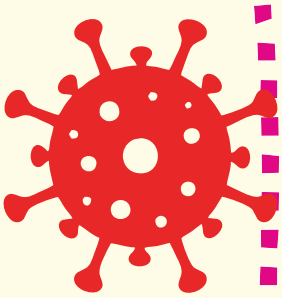

भग्गू - अच्छा !

डॉक्टर साहब - हाँ ! और सुनो।

रखना संग है सैनीटाइजर, इसकी भी इसमें चर्चा होगी।
और रखनी है सब साफ सफाई,यह बात बतलानी होगी।

भग्गू-

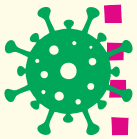

यह तब तो बड़ी मजेदार फिल्म होगी।
इससे सब सीखेंगे,नहीं बनेगा कोई रोगी।

डॉक्टर साहब - यही तो बात है।

चाहेगें यह फिल्म जब बनें, इसकी बातें सभी सुने।
जो भी बात दिखायी जाये, उसको देखें और गुने।

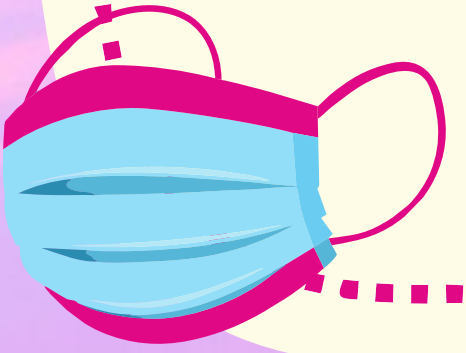

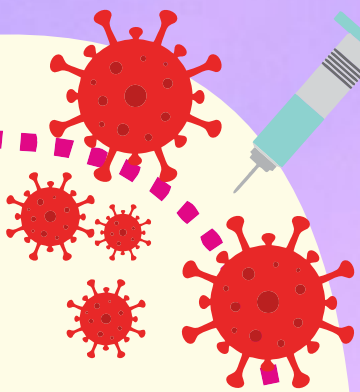

भग्गु -

बहुत ही अच्छा काम आप का।
कोविड से सबको फिल्म बचायेगी।
क्या करना है, क्या नही है करना।
यह जन जागरूकता लायेगी।

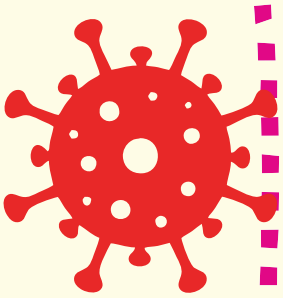

(आम लोगों की तरफ सम्बोधित करते हुए)

आप लोग भी यह फिल्म देखिए।
इससे तो अब कुछ सीख लीजिए।
कोविड के इस संकट काल में।
लापरवाही बिल्कुल न कीजिए।

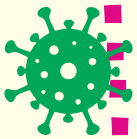

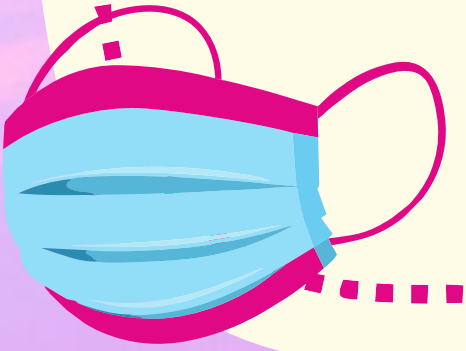

कोविड का आगमन

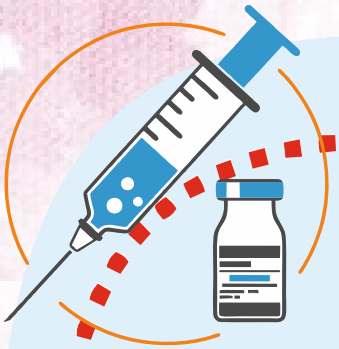

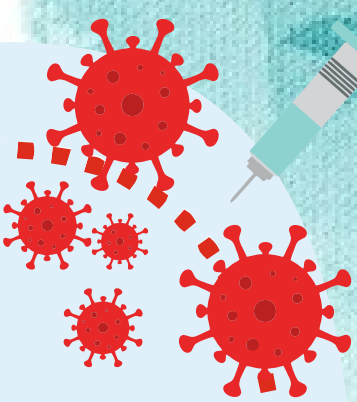

(दृश्य वर्णन- भग्गु के शरीर में कुछ कोविड लक्षण दिखते हैं, वे थके थके से दिखते हैं और बीच बीच में खाँसते हैं, इससे उनको कोविड बीमारी की आशंका बनती है। उनका यह हाल देखकर रघु उन्हें कोविड की जांच कराने की सलाह देते हैं।)

(भग्गू सामने आते हैं और सभी दर्शकों को राम राम कहते हुए आगे बढ़ते हैं। फिर बतलाते है कि आज मेरी तबियत ठीक नही है।)

भग्गु - मैं आप सभी लोगों को एक गाना सुनाना वाहता था। कोशिश करता हूँ।

(वह गाने की कोशिश करते हैं, तभी खाँसने लगते हैं।)

भग्गू - अरे यह क्या! मुझे तो खाँसी आ रही है।

(दृश्य वर्णन - तभी वहाँ रघु आते है और उनकी भेंट भग्गु से होती है। उसी दौरान यह संवाद होता है।)

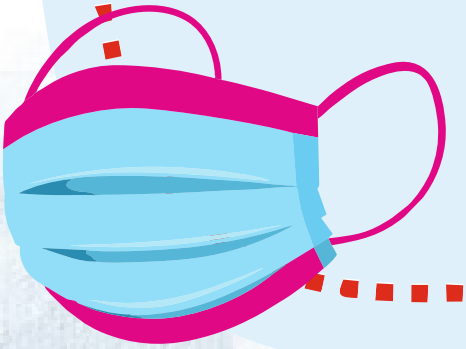

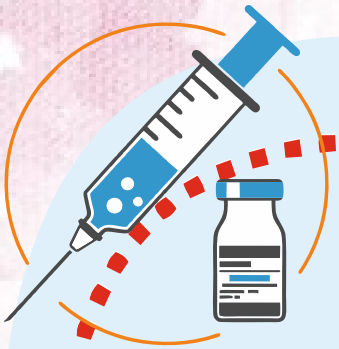

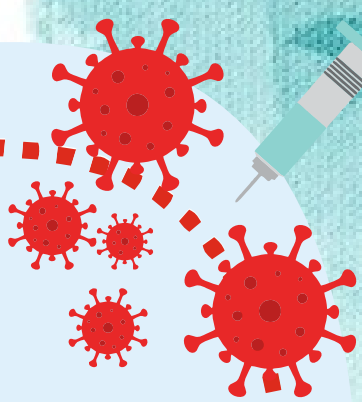

भग्गू - क्या कहूँ, कुछ ठीक नहीं लगता।
थका हुआ हूँ, और दर्द है होता।
थोड़ा थोड़ा सा बुखार है लगता।
और गले में खराश भी है होता।

रघु - (यह बात सुन करके रघु बिल्कुल चौक कर पूछते हैं)

क्या कहा?

क्या तुम्हें है खाँसी भी आती ?
सांस लेने में दिक्कत हो जाती ?
भैया! यह सब करोना के लक्षण।
इसमें ही यह समस्या पाई जाती।

भग्गू - (परेशान हो करके पूछते हैं)
तो क्या करना है? मुझे बताओ,
थोड़े में ही अब समझाओ।

रघु - अगर कष्ट यह सब हल्का है तो,
घर में एकांत आराम फरमाओ।
नहीं मिले फिर भी यदि राहत,
तो भैया! फिर डॉक्टर को दिखाओ।

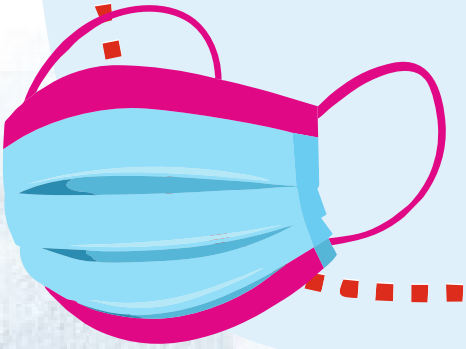

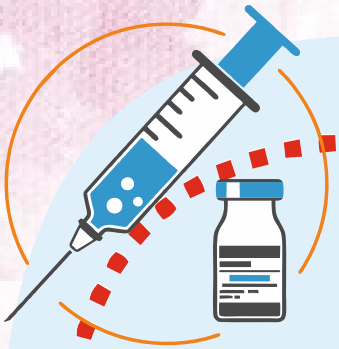

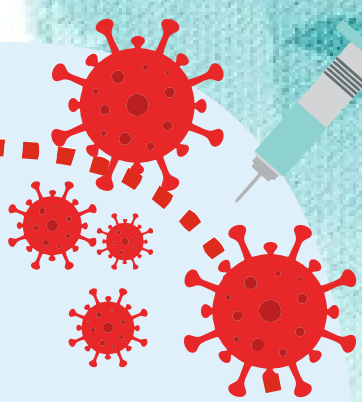

घर के लोगों से थोड़ा दूर ही रहना।
अपनी सामग्री अलग ही उपयोग करना।
थोड़ी सी अपनी समझदारी दिखाओ।
कोविड बीमारी से मुक्ति पाओ।

भग्गू - अगर बात है ऐसी भैया! तो मैं फिर अब जाता हूँ।
करूँगा मैं पहले आराम,फिर डॉक्टर को दिखलाता हूं

रघु - (आम जन को सम्बोधित करते हुए)

अगर आप में भी हैं ऐसे लक्षण।
तो फिर सावधान हो जायें उसी क्षण।
उचित सभी कोविड एहतियात अपनायें।
हो जरूरत तो फिर डाक्टर को दिखाये।

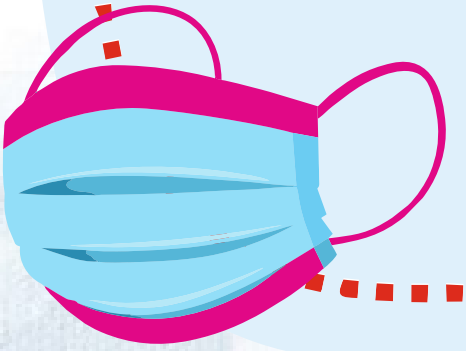

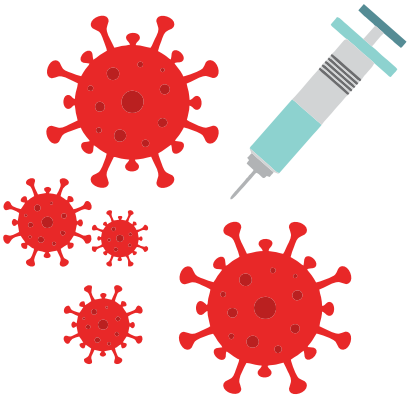

टीके के बाद न हो लापरवाही

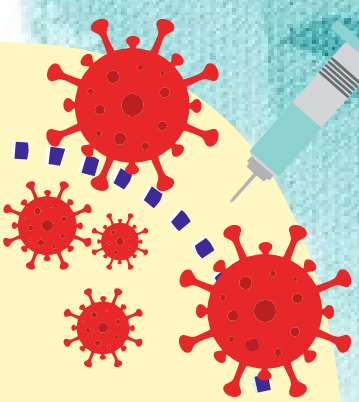

(भग्गू बाजार जा रहे हैं। किंतु वह कोविड का टीका लगवा लेने के कारण काफी निश्चित हो गये है और वह न तो मास्क लगाए हैं न कोई सैनीटाइजर ही रखे हैं। रघु रास्ते में उनसे मिलते हैं और कोविड बीमारी से बचने के लिए उन्हे टोकते हैं और फिर मास्क लगाने और सैनीटाजर साथ में रखने के लिए कहते हैं।)

रघु - कहाँ चले तुम भग्गु भाई ?
तुमने नहीं है मास्क लगाई।
कोविड का अभी बना है खतरा,
क्या यह ज्ञान तुमने है पाई ?

भग्गु- क्या यह तुम हो नहीं जानते ?
मैंने है कोविड टीका लगवाई।
अब तो मैं निश्चिंत हूँ रहता।
इन सब झंझट से है मुक्ति पाई।

रघु - ठीक बात जो टीका लगवाया,
पर तुम रखो इतना ध्यान।
नहीं टला कोविड का संकट,
अब भी हर पल रहो सावधान।

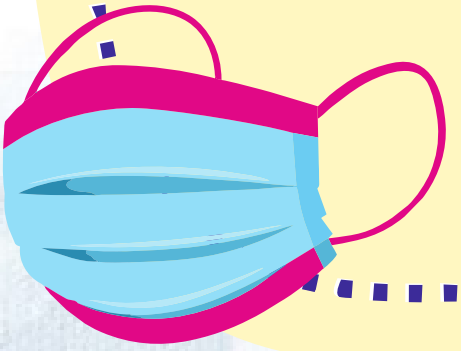

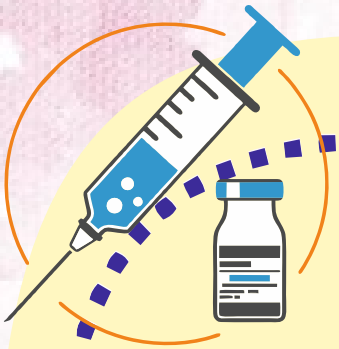

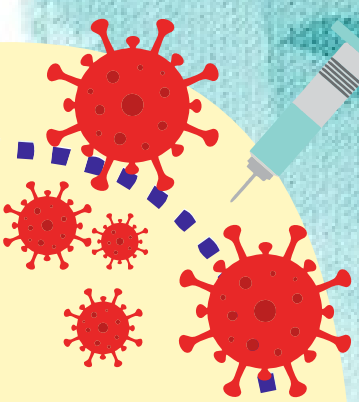

भग्गू - अब सावधान ? कैसा सावधान ?

रघु- जब भी जहाँ कहीं भी जाओ।
चेहरे पर तुम मास्क लगाओ ।
भीड़-भाड़ से बच कर रहना।
धोओ हाथ, सैनिटाइजर लगाओ।

भग्गु - बात ऐसी तो मैं मास्क को पहनूँ।
धोऊँ हाथ, सैनीटाइजर लगाऊं।

नहीं जाऊँगा भीड़ भाड़ में ।
मैं क्यों यह सब आफत बुलाऊं।

सुबह शाम पियूँगा काढ़ा ।
समय-समय पर करूँ गरारा।

रघु- (आम दर्शक की तरफ सम्बोधित करते हुए)

यह तो बहुत अच्छी है बात। इन सबको ठीक से रखों याद।
तुमने यदि यह समझदारी दिखाई।समझो,करोना से मुक्ति पाई।

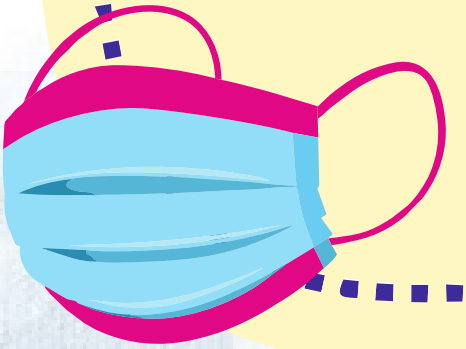

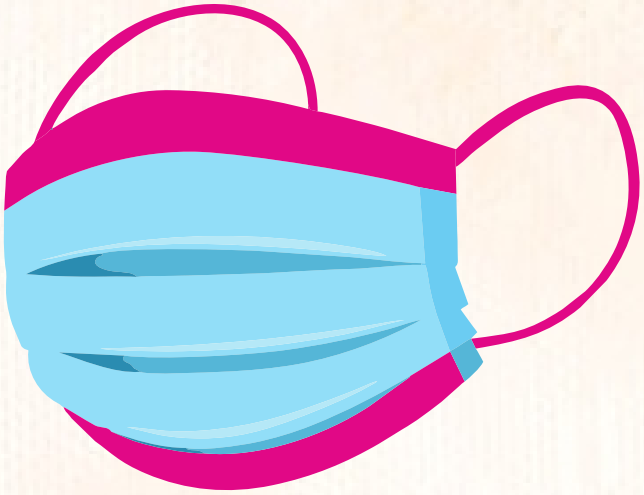

कोविड हथियार

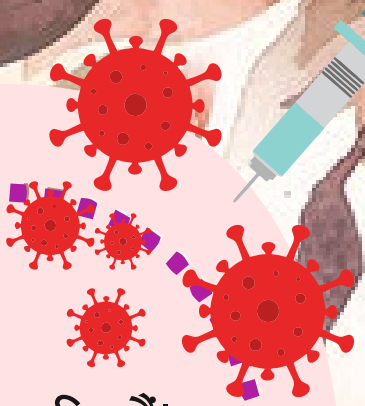

(दृश्य विवरण: भग्गू करोना से बचने के लिए सभी उपाय कर लिए हैं। इसी बात को बताते हुए वह खुश होकर के नृत्य कर रहे हैं।)

भग्गू - आप सभी लोगों को नमस्कार !
नमस्कार ! भई नमस्कार !

दर्शक - नमस्कार !

भग्गू - मैने एक कर लिया है कार्य,
इसका देता हूँ समाचार

जुटा लिया हूँ मैं सब हथियार।
अब मैं करूँगा दुश्मन पर वार।

मैं हूँ अब लड़ने को तैयार।
मैं हूँ अब लड़ने को तैयार।

(रघु और अन्य सभी लोग तमाशा देख रहे हैं। रघु सोचते हैं कि यह कहाँ लड़ाई झगड़ा करने जा रहा है। जरा मैं चल करके देखूँ।)

रघु - (आगे बढ़ करके आते हैं और फिर भग्गु से वह पूछते हैं।)

कैसा हथियार एकत्र किए हो भैया ?
तुम किसे मारने जाते हो ?
क्या तुम्हें नहीं कानून का डर है ?
जो तुम ऐसी हिम्मत दिखलाते हो !

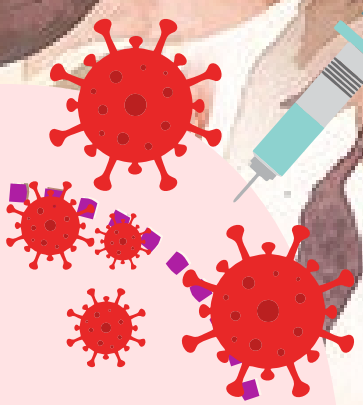

भग्गू - यह हथियार तो डॉक्टर बताएं ।
यही तो सबकी जान बचाए।
यह देखो यह मास्क है मेरा।
इसे नाक, मुंह पर है लगाना।

रघु - अच्छा तो कुछ और हो रखते ?
जो कि तेरी हैं रक्षा करते।

भग्गू - देखों! पॉकेट में सैनिटाइजर मेरा।
इससे है कोराना को मारना।
दूर ही रहना पास में न आना।
वहीं से सब बातें सुनना सुनाना।

रघु- यह तो है बहुत ही सुंदर बात।
अच्छे हथियार है तेरे पास।
हम तो समझे कर रहे हो झगड़ा।
तभी थी मेरी अटकी सांस।

(सामने जनता को सम्बोधित करते हुए)

तो आप लोग भी सुन लो भैया!
ये सब हथियार अब रखना पास!
तभी सुरक्षित जीवन होगा !
और कोविड नही आयेगा पास!

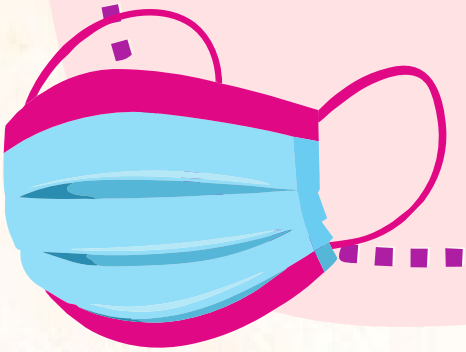

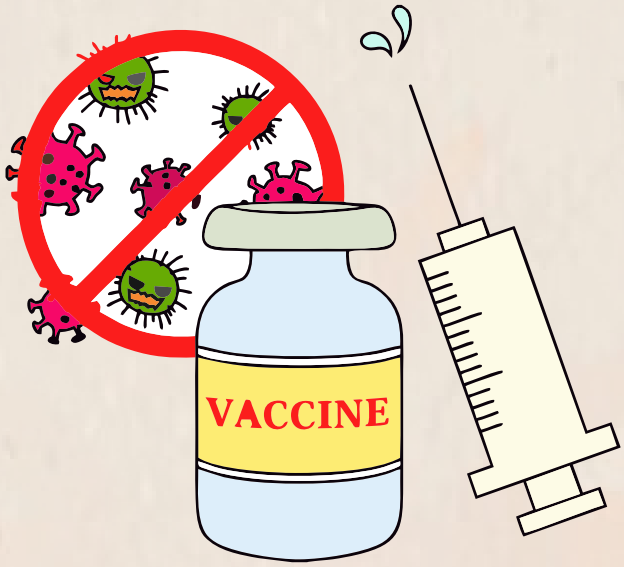

करोना ठग

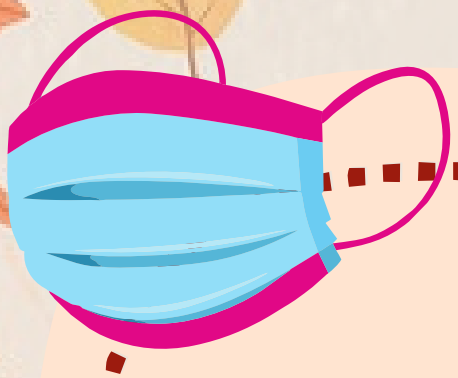

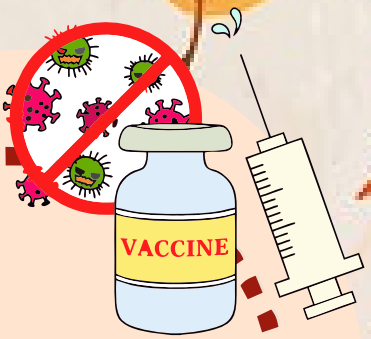

(**कथा सार**- एक आदमी भ्रामक ढंग से बातें करके करोना के इलाज की दावेदारी करता है। कई लोग उससे प्रभावित भी हो जाते हैं। जब पुलिस को ज्ञात होता है तो वह उसे भ्रामक विज्ञापन और अंधविश्वास फैलाने के अपराध में गिरफ्तार करके ले जाती हैं।)

दृश्य वर्णन - एक व्यक्ति फर्जी ओझा बन करके कोविड बीमारी दूर करने के लिए मंत्र पढ़ते हुए मन ही मन बुदबुदाता है और कुछ उल्टा पुल्टा मंत्र सा पढ़ता है।

ओझा- (ओझा मंत्र पढ़ते हुए)

चल माँ करोना छप्पर वाली,
मेरा वचन न जाए खाली ।
जो भी इलाज कराने आए हैं,
सभी बजाएं जोर से ताली।

(वहाँ पर काफी लोग उस तमाशा को देख रहे होते हैं, वे सभी लोग जोर जोर से ताली बजाते हैं । एक व्यक्ति उसके सामने बैठा हुआ है, उसे ही देख करके वह मंत्र सा पढ़ता है।)

ओझा- अब तुम्हारा करोना दूर चला गया।

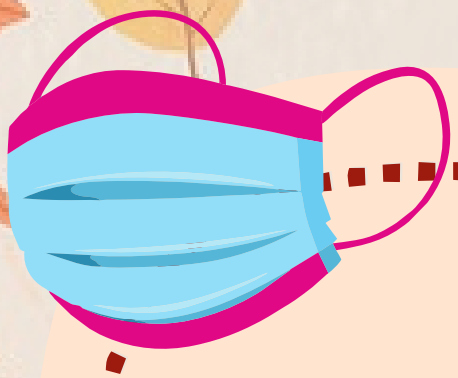

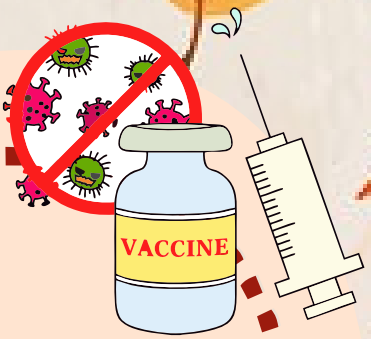

व्यक्ति - तो अब हम जायें, ओझा जी।

ओझा- हाँ ! अब तुम जाओं ! तुम्हारा करोना हमने कैद कर लिया है। अब तुम्हे करोना नही होगा।

(एक महिला यह सब देखती है और वह भी करोना के इलाज के लिए आगे जाती है।)

महिला - अरे वाह ! यह तो बहुत ही अच्छा काज ।
चलिए ! हम भी करा लेते हैं करोना का इलाज।

(वह औरत ओझा के पास जाती है और अपना इलाज कराने के लिए ओझा से कहती है।)

महिला - ओझा जी ! नमस्कार।

ओझा जी - नमस्कार जी, नमस्कार। और बताइये अपना समाचार।

क्या कोई समस्या है ? सब कुछ तो अच्छा है ?

महिला - ओझा जी ! ओझा जी!

करोना के डर से हम हैं परेशान ।
क्या कोई इसका उपाय हैं आसान ?

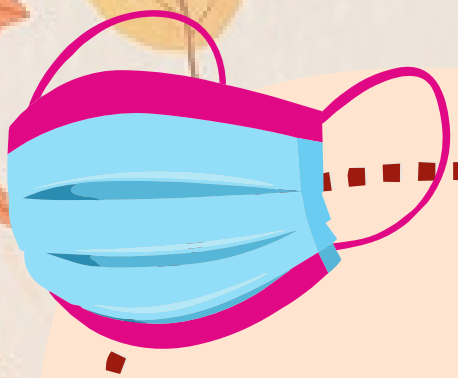

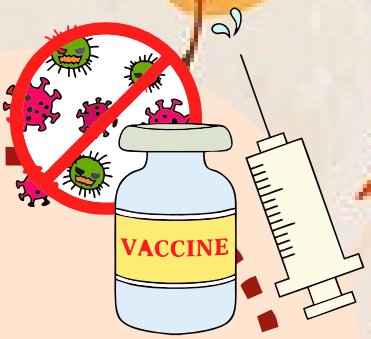

क्या आप कोई है मंत्र जानते ?
जिससे करोना हैं दूर भागते?

ओझा - हाँ जी , हाँ जी , क्यों नही जी!

सभी करोना मैं दूर भगाता , मैं तो ऐसा मंत्र हूँ पढ़ता।
मेरा तो नाम जैसे ही सुनता, करोना वायरस दूर भागता।

महिला - अच्छा! यह बात है।

तब तो मेरा भी तुम मंत्र पढ़ दो।
करोना बीमारी का डर दूर कर दो।

ओझा - (वह ओझा मंत्र पढ़ने का नाटक करता है ।)

पढ़ता हूँ मैं वह जादू टोना।
करे दूर जो अभी करोना।

ओझा- ओम रिंग रिंग श्रृंग।
करोना से हो जा फ्री।
जाओ ! मैंने फूंका है वह मंतर।
सभी करोना गए धरती के अंदर।

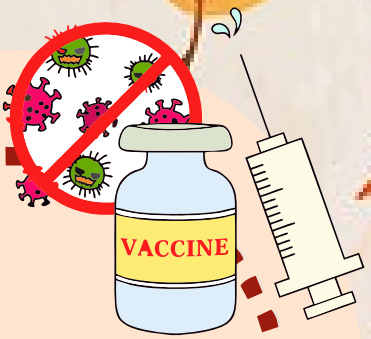

महिला - अरे वाह!

मेरा तो करोना ठीक कर दिया !
ऐसा आप ने मंत्र पढ़ दिया।

ओझा- अच्छा ! तो लाओ अब मेरी फीस।
होते पूरे रूपये चार सौ बीस।

महिला - (वह ओझा को पैसा देती है।) यह लीजिए ओझा जी !

(इसी बीच पुलिस वहाँ पर आती है। सभी लोग पुलिस को देख करके भागने लगते हैं। किन्तु ओझा चाह करके भी भाग नही पाता है और वह पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है।)

पुलिस - कई दिनों से सुन रहा था कहानी ।
आज है पकड़ा, अब है मजा चखानी।
सब अंधविश्वास यह दुष्ट है फैलाता।
लोगों को है यह बस मूर्ख बनाता ।
चलो! थाने पर अब मेरे साथ ।
वहीं पर होगी सारी पूछताछ।

ओझा- (हाथ जोड़ करके गिड़गिड़ाते हुए)

नहीं , नहीं ।
करो माफ मुझे अबकी बार।
छोड़ दो मुझे, अब मेरे सरकार!

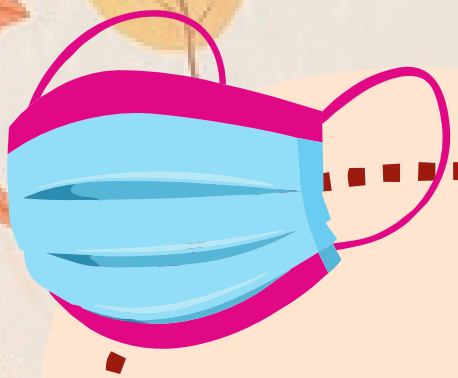

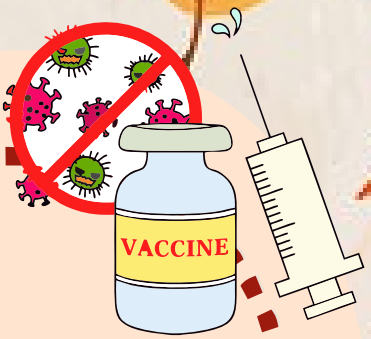

पुलिस - बहुत दिनों से थी तलाश तेरी।
ठगने के लिए करता था फेरी।
अब वहीं पर जो कहना है कहना,
अब आगे कोई भी मंत्र न पढ़ना।

पुलिस - (आम जन की तरफ सम्बोधित करते हुए)

सावधान है आपको रहना, इन सब धोखेबाजों से।
नहीं होना गुमराह कभी भी, इन सबकी ठगी की चालों से।

जहॉ कहीं भी इनको पाये, हमको तुरंत सूचना भेजवायें।
इनका हम करे सही इलाज,तभी छोड़ेगें ये यह गड़बड़ काज।

कोविड कवि सम्मेलन

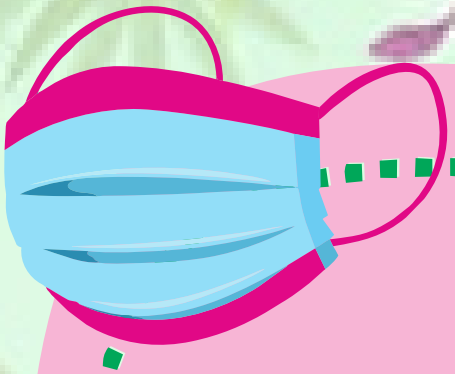

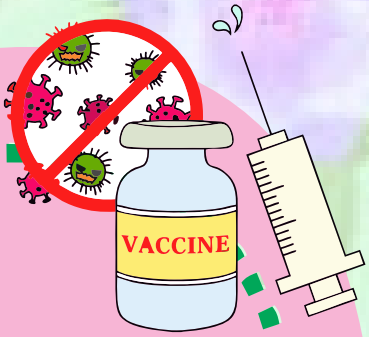

(विवरण करोना कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इसमें विभिन्न कवि करोना के किसी ने किसी पहलू पर अपनी कविता पढ़ते हैं।)

कवि संचालक -

जैसा कि हम सभी जानते हैं ,इसे तो आप सभी जरूर मानते हैं।
यह समय है बहुत भारी, क्योंकि आई है भयानक कोविड बीमारी।

तो जो भी कविता आज पढ़ेगा, वह बस कोविड की बात करेगा।
तो जो भी बात कही अभी हमने,क्या उसे सुन लिया आप सभी ने?

अन्य कवि- हाँ! जी हाँ !
हमने आपकी बात सुनी है।
बिल्कुल वैसी ही कविता बुनी है।

रघु - यह तो बहुत ही बात है अच्छी ।
तो कवि सम्मेलन शुरू करें जी।

तो पहले हम कवि लोटन को बुलाते।
जो अति मजेदार कविता सुनाते।

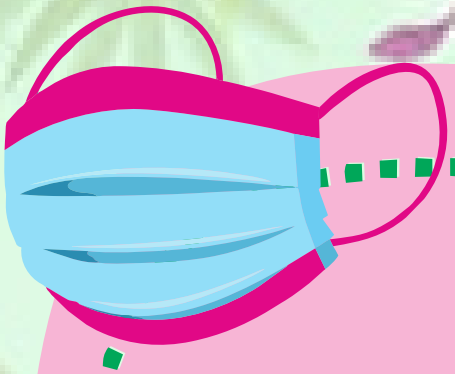

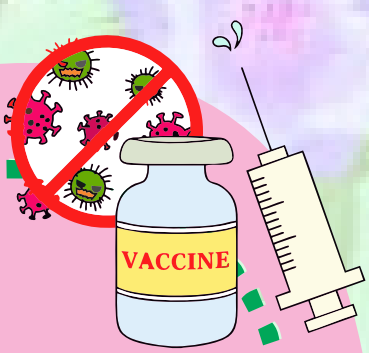

कवि लोटन - आप सभी को है मेरा नमस्कार!
कविता से मैं करता हूँ चमत्कार!
आगे मैं कविता हूँ सुनाता।
उसमें कोविड कथा हूँ बताता।

एक करोना कीड़ा आया।
बीमारी में कोविड कहलाया ।
इसका है अजब रूप आकार,
गोल सतह पर नुकीला उभार।

नाक मुँह से यह है घुस जाता ।
श्वसन नली में आराम फरमाता।
जाए फेफड़े में, परिवार बढ़ाए।
फिर सांस लेने में मुश्किल आए।

अन्य कवि- वाह! वाह! क्या बात है!

कवि लोटन - इसलिए मैं कहता हूँ यारों।
नाक, मुँह पर मास्क लगाओ।
करोना को खुद से दूर भगाओ ।
अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाओ।

जब भी अजनबी वस्तु छू जाये।
तुरन्त आप सैनीटाइजर लगायें।
अभी बना कर रखे सबसे दूरी।
कोविड से बचने के लिए है जरूरी।

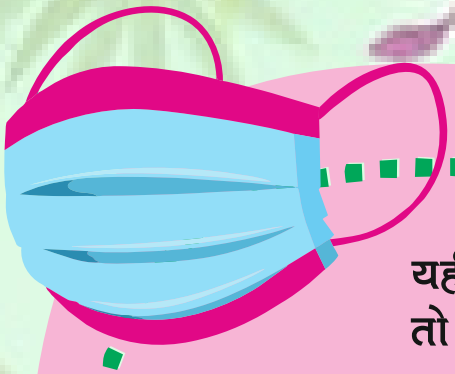

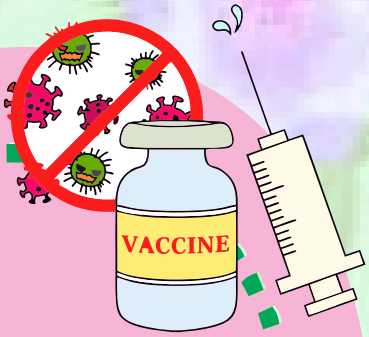

यही थी मेरी एक छोटी कविता।
तो नमस्कार! अब मैं हूँ चलता।

संचालक रघु- धन्यवाद ! कभी लोटन भाई !
तुमने मजेदार कविता सुनाई।
अब मैं बुलाता कवि लाल बुझक्कड़ ।
कृपया आ जायें, जल्दी इस मंच पर।

कवि लाल बुझक्कड़- नमस्कार ! सब लोगों को भाई।
हो आदेश तो कविता सुनाई।

अन्य कवि - सुनाइए। सुनाइए। अब और देर न लगाइये।

लाल बुझक्कड़- मेरी कविता का शीर्षक -'करोना',
इसमें नहीं चलता कोई जादू-टोना
इसका मामला बहुत है साफ।
यह रोग तब फैले, जब रोगी है पास।

इस लिए यह ध्यान है रखना।
रोगी के न कभी पास फटकना।
पर कौन है रोगी ? क्या कोई जाने ।
इसीलिए तो सबसे दूरी है रखना।

अन्य कवि- वाह! वाह! क्या बात है! क्या बात है!

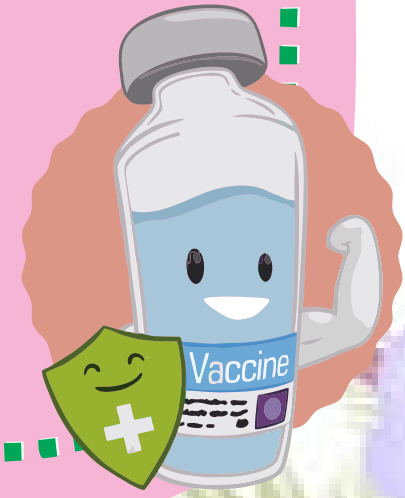

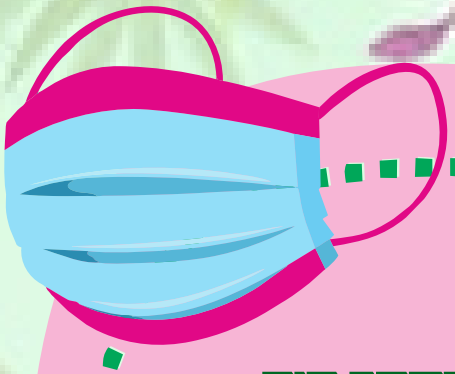

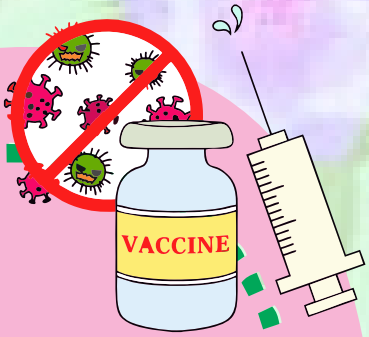

लाल बुझक्कड़- अब आगे सुनिए!

यदि दूरी दो गज से कम है।
तब करोना का नहीं रहम है।
इसीलिए उचित दूरी अपनाएं।
करोना से अब दूर हो जाए।

खत्म हो गई मेरी कविता।
अच्छा! तो मैं अब आगे बढ़ता।
दूर से ही अब मैं करूं नमस्ते!
हम नहीं अभी हाथ मिला सकते।

अन्य कवि- वाह! क्या बात है ! लाल बुझक्कड़ जी।

कवि सम्मेलन संचालक-

अभी लाल बुझक्कड़ ने सुनाई अच्छी कविता।
इस भरे मंच से उन्होने दिल सबका जीता।

इसके पहले कि मैं अगले कवि को बुलाऊं।
मै भी अपनी एक छोटी सी रचना सुनाऊं

अन्य कवि- वाह! वाह! सुनाइए! सुनाइए!

रघु- चला गया एक दोस्त के घर पर।
चौंक गए वह तो मुझे देखकर।
पहले तो वह मुँह को लटकाए।
बाद में जबरदस्ती धीरे से मुस्कुराए।

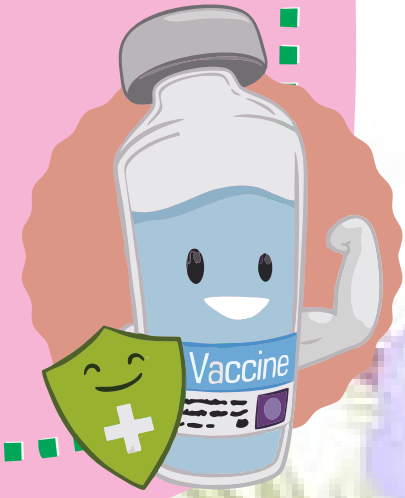

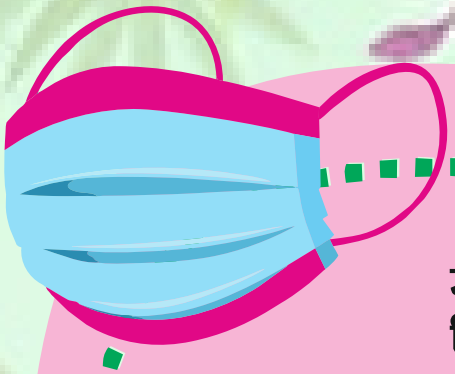

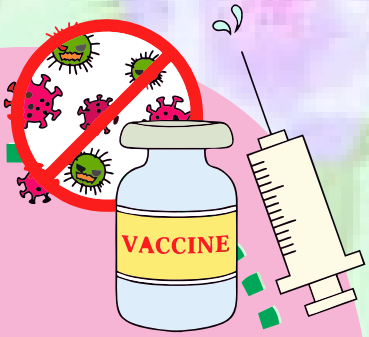

उन्होंने फिर सैनिटाइजर दिखाया।
जिसे वह घर के बाहर था लगाया।

तुरन्त लगाया मैं फिर उसे हाथ में।
तब जाकर मुझे बुलाये अपने घर में।

एक गिलास कोविड काढ़ा पिलाया।
ऐसा उन्होने अपना प्रेम दिखाया।

फिर हाथ जोड़कर बोले-नमस्ते!
बात हो गयी, जाये अपने रास्ते।

तब मैने भी तत्परता दिखायी।
दूर से ही बोला- नमस्कार भाई!

यही थी मेरी छोटी कविता।
अब मैं दूसरे कवि को बुलाता।

अन्य कवि- वाह भाई !वाह! क्या बात है!

संचालक रघु - अब मैं हूँ एक नए कवि को बुलाता।
जिनसे आप सभी का है बहुत ही करीबी नाता।

सभी उनका अति सम्मान हैं करते ।
नाम तो पकौड़ी लाल सब हैं कहते ।

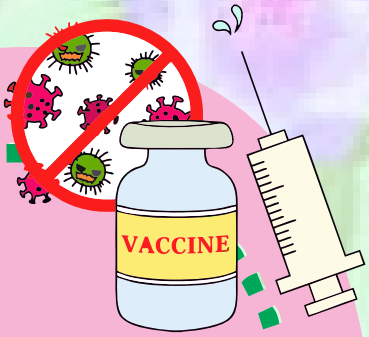

अन्य सभी कवि - (जोरदार तालियां)

पकौड़ी लाल -

नमस्कार ! सबको है मेरा।
कविता पढ़ूँ, शीर्षक है 'सवेरा'।

अन्य सभी कवि-पढ़िए! पढ़िए। और देर न कीजिए।

पकौड़ी लाल- धन्यवाद।
अब मेरी कविता सुनिए फिर आगे।
सुन कर कविता आप लोग भी जागें।

पकौड़ी लाल - एक मित्र थे बड़े ही आलसी।
'खाओ पियो' थी उनकी पॉलिसी।

अभी हाल में थे वे हुए बीमार।
आती थी खांसी, हल्का बुखार।

सांस लेने में थी कठिनाई।
तब मैंने उन्हें बात समझाई।

लक्षण यह तो लगे करोना।
जॉच कराओ, देर करो ना।

पर था उनका आलसी स्वभाव।
बात को मेरी न दिए कोई भाव।

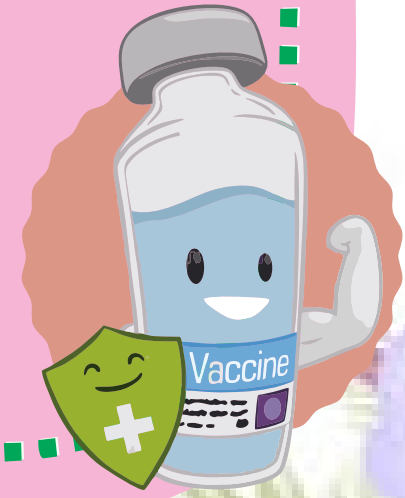

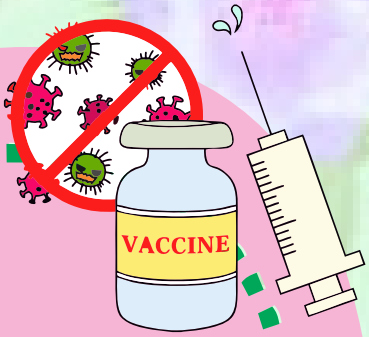

हुई जॉच तो मिला करोना।
हुआ वही, आगे जो था होना।

रहे माह भर अस्पताल वह अकेले।
सभी समस्या खुद ही सब झेलें।

खत्म हुई कविता, अब हम हैं जाते।
क्यों नहीं आप लोग हैं ताली बजाते?

अन्य सभी कवि- (सभी लोग जोर से ताली बजाते है।)
वाह! वाह !वाह !वाह!

संचालक रघु- अब हम कवियित्री आरती को बुलाते,
उनसे अब उनकी कविता हैं सुनते

कवियित्री आरती- नमस्कार ! आज मै जो यह कविता हूँ सुनाती।
उसमें सबके प्रति श्रद्धा हूँ व्यक्त करती।

मेरा नमन है सभी उन भाई को ।
जो लड़ रहे करोना की लड़ाई को।

नमन है मेरा सभी नर्स को।
नमन है मेरा सभी डॉक्टर को ।

नमन है मेरा सभी वर्कर को।
नमन है मेरा इनके संघर्ष को।

मेरी कविता वह बात बताए।
जो कोरोना से आप को बचाए ।

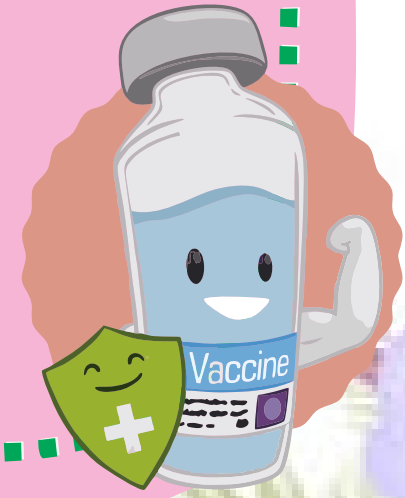

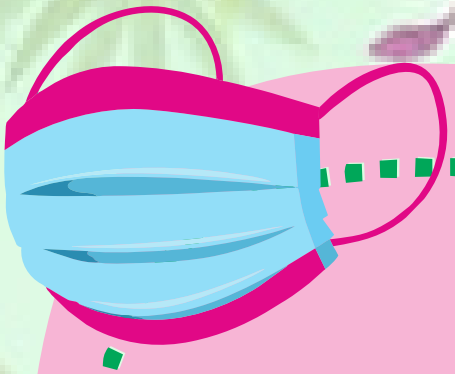

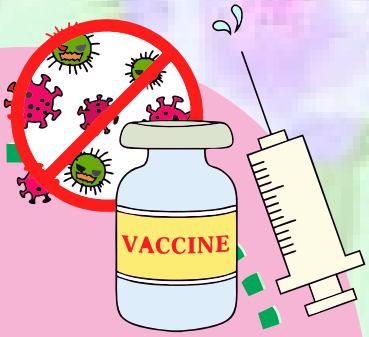

कवियित्री आरती -

सदा लगाओ अब तुम मास्क, ढके रहो मुँह और नाक।
पेट को तुम न खाली रखना, करो गरारा, काढ़ा पीना।

अभी कुछ ऐसी है मजबूरी, बना के रखो दो गज दूरी।
सरसों तेल, नाक में लगायें, घर में कपूर, गुगुल जलाएं।

हल्दी, सौंठ दूध में मिलाएं, पूरे परिवार को इसे पिलाएं।
सुबह चाय में लौंग को डाले, सी विटामिन के फल खा लें।

सुबह धूप का सेवन कर लें,गले को हरदम गीला रखें।
इन बातों को यदि रखें ध्यान,हो दूर करोना, सुरक्षित जान।

हुई खत्म अब मेरी कविता, जो करे पालन, वही है जीता।

संचालक-

इसी के साथ करोना कवि सम्मेलन हुआ पूरा।
स्वास्थ्य पर ध्यान दें,कोई उपाय न करें अधूरा।
आगे हम फिर मिलेगें किसी शुभ अवसर पर।
जब कोविड का नही होगा हम सब पर असर।

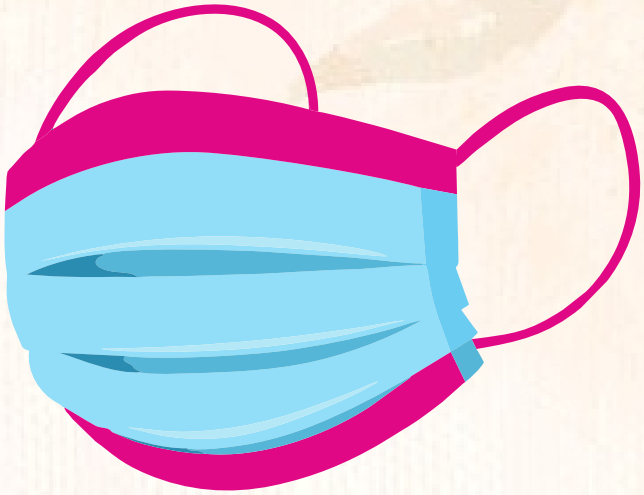

करोना काढ़ा

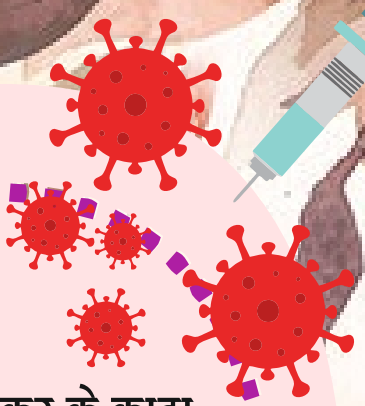

दृश्य वर्णन - शाम का समय है। रघु अपने घर के सामने बैठ कर के काढ़ा पी रहे हैं। तभी भग्गु उनसे मिलने के लिए उनके पास आते हैं। दोनों लोगों की आपस में बातचीत आरंभ होती है।

भग्गु- अरे रघु भैया! राम राम !

रघु - राम राम! भई राम राम!

भग्गु - भैया क्या पी रहे हैं ? बहुत धीरे धीरे सुरसुरा के अवाज आवत हवै।

रघु - काढ़ा हवै, काढ़ा ! ला तूहु पिया!

भग्गु - काढ़ा ! उ का तबीयत ओबीयत ठीक हवै न?

रघु - तबीयत ओबीयत तो कुल ठीक बाय, लेकिन इ जवन कोविद बीमारी चलल बाय न, ओसे बचै खातिर डॉक्टर लोग काढ़ा पीयले क सलाह देहले बाटै।

ई देखा पोस्टर ! एमन कोविद से बचे खातिर काढ़ा पीयले के बारे में अच्छे से समझावल बाय।

(रघु अब भग्गु को पोस्टर दिखाते हैं और अब उसे बहुत ध्यान से देखते हैं। पोस्टर में काढ़ा बनाने की विधि व उपयोग महत्व के बारे में जानकारी दी गई है , दोनों लोग उसे ध्यान से पढ़ते हैं और उसने बताई गई बातों पर चर्चा भी करते हैं।)

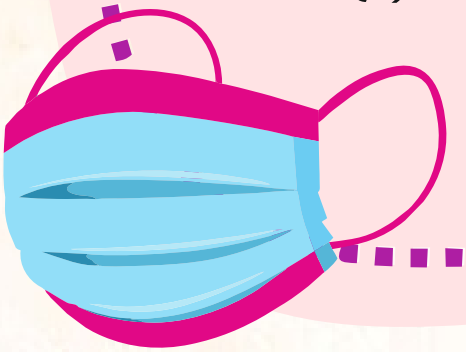

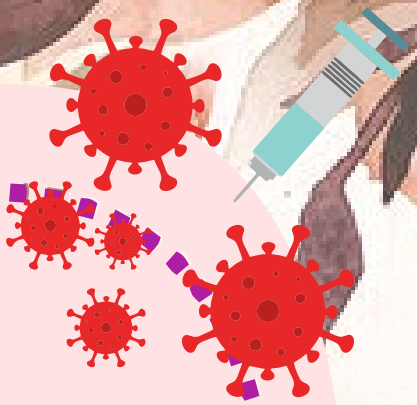

भग्गु - इत बहुत ही अच्छी जानकारी बाय।

रघु - तब एके दिवार पर चिपका देहले क जरूरत हवै। जेसे कि सब लोग एके पढ़े।

भग्गु- त इ काम एही समय कै देहले क जरूरत हवै। चला एके कई दिहल जाय।

(रघु और भग्गु दोंनों लोग पोस्टर को सामने के दिवार पर चिपका देते है।)

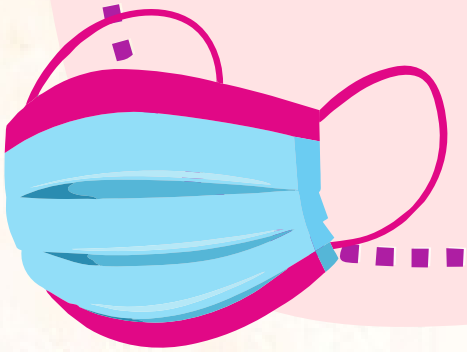

कोविड पोस्टर

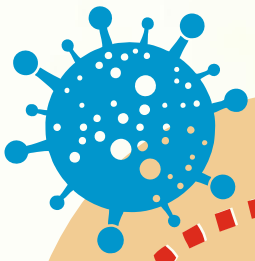

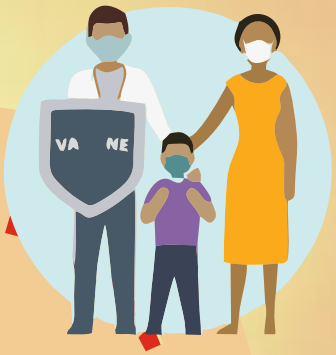

(कथा सार - भग्गु करोना से बचने के लिए बनाए गए पोस्टर को देखते हैं और उसे समझने की कोशिश करते हैं। इसी बीच रघु वहां पर आ जाते हैं रघु से भग्गु पोस्टर के बारे में पूछते हैं। रघु उन्हें पोस्टर के बनाए गए चित्र को समझाते हैं)

रघु - यह कैसा कागज है भैया ?
कहाँ लिए इसे जाते हो ?
क्या लिखा हुआ है इसमें ?
इसमें क्या दिखलाते हो ?

भग्गू -यह करोना का लक्षण बतलाता, पर कठिन है कुछ इसकी भाषा।
पास तेरे मैं हूँ अब लाया, तुम समझा दोगे, मैं करता हूँ आशा।

रघु - तो यह बात है !
अच्छा तो आओ ! अब मैं तुम्हें इसे बताऊँ।
कहा गया है क्या, तुमको मैं यह समझाऊं ।

भग्गू -हाँ भैया! जरा समझाओ, जो कुछ जरूरी बात हो, उसे बताओ।
(रघु पोस्टर में दिये गये मास्क वाले चित्र को देखते हैं और फिर उसके बारे में बताते है।)

रघु -यह देखो है मास्क लगाए, जिसमें वायरस नाक, मुँह में न जाए ।
इससे कोविड नही फैलता, और इंसान सुरक्षित है रहता ।

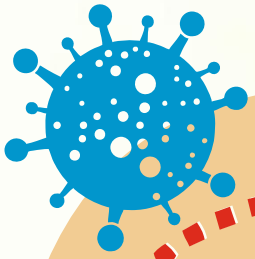

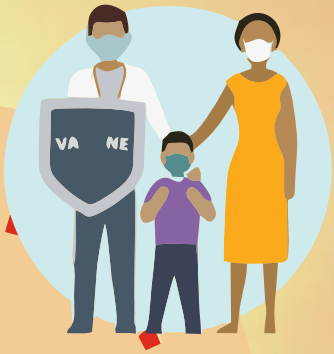

(इसके बाद भग्गु पोस्टर में दिये गये दूसरे चित्र को देखते है
और फिर उसके बारे में पूछते है।)

भग्गू -अच्छा! और यह क्या बता रहा है ?
जो इस चित्र में कुछ दिखा रहा है।

रघु-देखो! घर आकर यह हाथ है धोता, इससे वायरस दूर है होता।
पर इसमें कुछ तुम ध्यान है देना, २० सेकेंड तक हाथ है धोना।

भग्गू - और बीस सेकेंड से कम रहा तब क्या होगा?

रघु - तब करोना नष्ट नही होगा। कोविड रोग का डर होगा।

(भग्गु उस पोस्टर के एक अन्य चित्र को दिखाते है और
उसके बारे में पूछते हैं)

भग्गू - अच्छा ! और इसमें क्या है ?

रघु -देखो ! यह सैनिटाइजर लगाए , जिससे वायरस समाप्त हो जाए।
सैनीटाइर करोना को मिटाता, इससे सब कोविड रोग दूर हो जाता।

भग्गू -तो इसे कब लगाते हैं ? जिससे कि वे दूर हो जाते हैं।

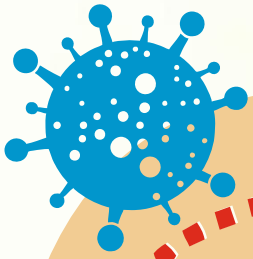

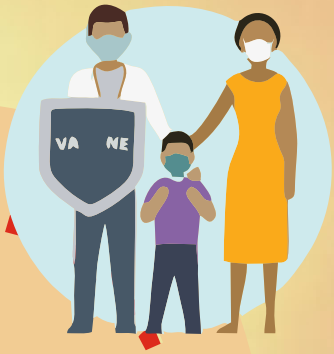

रघु -जब भी कहीं भी बाहर जाएं।
इधर उधर कुछ भी छू जाए।
तो कहीं यह अब शरीर में न जाए।
उस समय यह सैनिटाइजर लगाएं।

भग्गू -तब तो यह बहुत काम की है जानकारी।
इससे दूर होती है कोविड-१९ बीमारी।

रघु -तो यह काम की जानकारी जो पाएं, इसे और लोगों को भी बताएं।

भग्गु -और यह क्या बता रहा है ?

(उस पोस्टर के एक अन्य चित्र को दिखा भग्गु सवाल करते हैं।
इसी बीच रघु जोर से खाँसते हैं और छींकते हैं।
इस दौरान वह मुँह, नाक पर रूमाल लगा लेते हैं।)

रघु -अरे यह तो छीकने के बारे में ही बता रहा है।
जब भी छींके, नाक मुँह पर टिशू पेपर लगाएं।
अगर नहीं है तो फिर अपनी बाँह ही नाक पर लाएं।

भग्गु - तब तो बड़ी अच्छी बात है।

भग्गु- तो इस पोस्टर को औरों को बताएं।
चलो इसे दीवार पर चिपकाएं।
जिससे करोना से बचने की जानकारी,
सब दूसरे लोगों के पास भी जाये।

(दोनों मिल करके उस पोस्टर को दिवार पर चिपकाते
है और उसका क्लोज अप सामने आता है।)

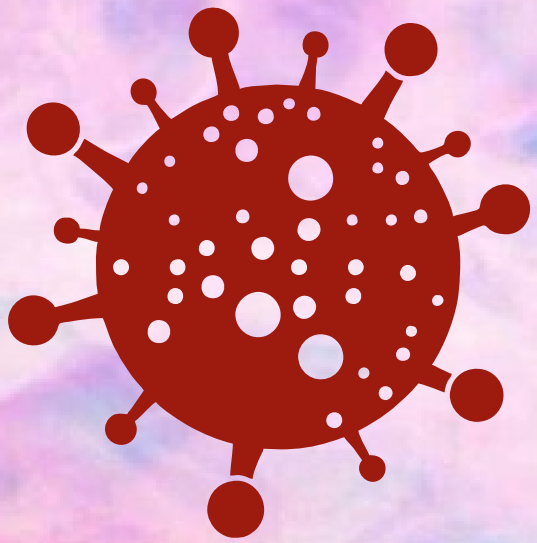

बचें भ्रामक विज्ञापन से

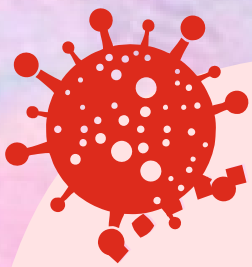

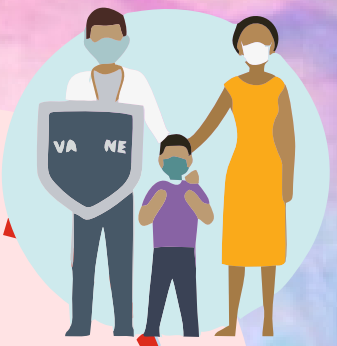

(कथा सार- भग्गू एक अखबार के विज्ञापन को देख रहे हैं। इसी बीच रघु वहॉ पर पहुँचते हैं।)

रघु - क्या देख रहे हो भग्गु ?

भग्गू - यह देखो !

इसमें व्यक्ति ने है बताया।
करोना का इलाज है दिखाया।
घर की बनी करोना की दवा खाएं।
और करोना को तुरन्त दूर भगाएं।

रघु- मेरी जानकारी में तो भैया!
करोना की कोई नही कारगर दवाई।
फिर यह कैसे दिखा रहा है दावेदारी!

भग्गू -यह समाचार तो आज है आया।
इसमें तो इसने यही है बताया।

j?k &मुझे तो इसमें गड़बड़ है दिखता।
कोई ठग है जो यह सब है लिखता।

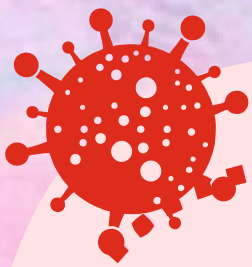

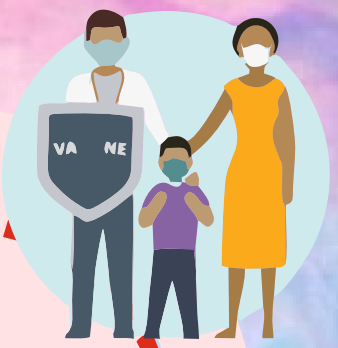

भग्गू-तो आओ! इसका हम पता लगाए ।
क्या सच है यह तो जान जाएं ।

(वे दोनो पुलिस और डाक्टर के पास जाते हैं और इसके बारे में पता लगाते हैं। उनके समक्ष जाने पर वे दोनों उनको समझाते हैं और इसके बारे में बताते है।)

इंस्पेक्टर फतेबहादुर -जो भी कोविड गलत दवा है देता।
वह दूसरों को बस ठग है लेता।
अगर कभी भी वह पकड़ा जाये।
तो हम उस पर जुर्माना लगायें।

डाक्टर -मेडिकल की दुनिया है यही बताती ।
कोविड की कोई दवा नहीं है आती ।
इससे बचने का है बस एक उपाय।
सभी को कोविड टीका लग जाय।

रघु - तो भैया ! आप सबने देख लिया। अब तो हम यही हैं कहते कि -

कोविड से बचने का बस एक उपाय।
जल्दी से सबको टीका लग जाय।
तो आप सभी लोग पंजीकरण कराये।
और जाकर कोविड का टीका लगवायें।

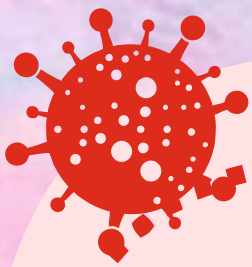

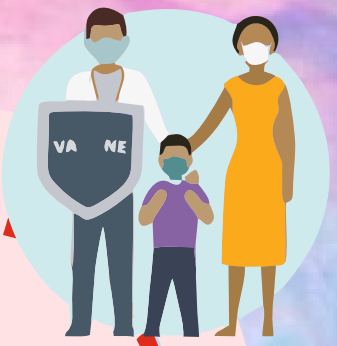

भग्गु- बिल्कुल सही बात बतायें।
इसे ही सब लोग अपनाये।
अभी कोविड की जंग है जारी
लापरवाही पड़ेगी भारी।

रघु और **भग्गु** एक साथ -आप सब लोग इस बात को जाने।
डाक्टर जो कहें, उस बात को माने।
इधर उधर की बात में न आयें
कोविड बचाव का उपाय अपनाये

करोना की कविता

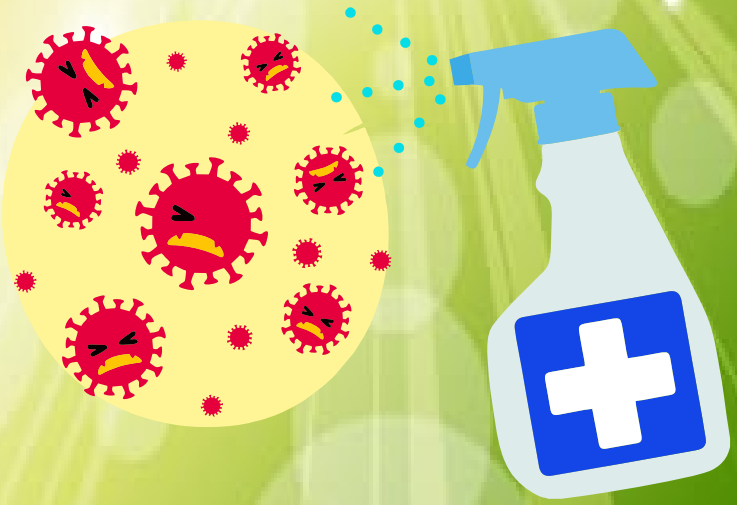

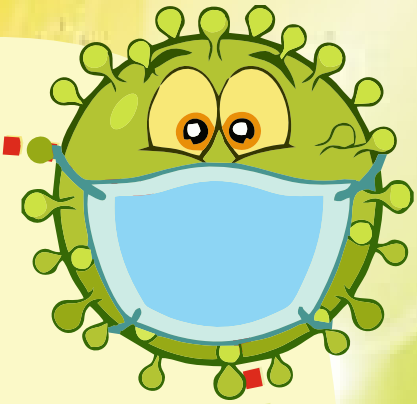

कथा सार -रामबुझ, भग्गु, रामजीत, श्यामनारायण, बॉकेबिहारी और नगीना -

सभी लोग एक जगह पर एकत्र हुए थे। सब लोग आपस में बात कर रहे थे। तभी बात कोविड पर चल पड़ी। लोग अपने अपने अनुभव सुना रहे थे। फिर लोगों को रामबुझ ने बताया कि वह कोविड पर वह कविता लिखे हैं। फिर सब लोग उनसे कविता सुनाने की जिद करने लगे।

रामबुझ - साथियों! इस समय चारों तरफ कोविड पर ही चर्चा हो रही है। इसके बारे में लगातार बातें सुन करके मन ऊब गया है। अब इच्छा तो यही करती है जो अगर कोई कुछ भी बता रहा है तो वह गा करके ही बताये।

राम जीत - हाँ! हाँ ! बात तो सही कह रहे हैं। चलो हम लोग ही कुछ गा करके बताते हैं। पहले आप ही शुरू कीजिए।

श्याम नारायण - हाँ! बिल्कुल सही बात है। तो रामबुझ आप शुरू कीजिए।

रामबुझ - चलिए आप लोग जिद कर रहे हैं तो मैं आप लोगों को एक कविता सुना रहा हूँ। इसे हमने अभी दो दिन पहले ही लिखा था। इसका शीर्षक है 'कोविड से बचाव'

रामजीत - सुनाइये! सुनाइये ! हमको भी पता चले कि कोविड में क्या सावधानी अपनानी है।

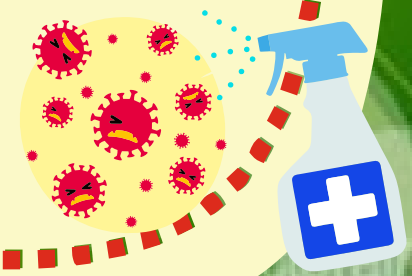

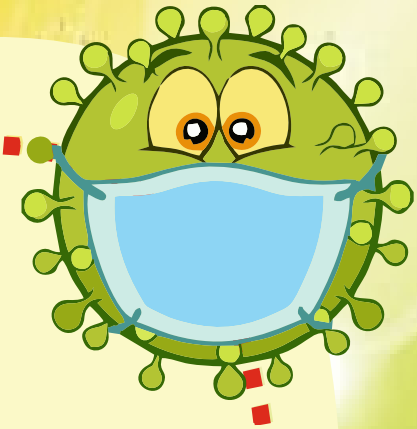

jामबुझ - तो आप लोग सुनिए कविता-

माह दिसंबर वर्ष उन्नीस में,
जो यह कोविड रोग है आया।
प्रथम बार दुनिया ने खुद को,
अतिविकट स्थिति में है पाया।
नहीं बैठ सकते हैं पास,
ऐसा है इसका अभिशाप।
सांस, हवा इसको फैलाए।
अत: सभी लोग मास्क लगाएं।
कहीं संक्रमित वस्तु यदि छू जाए।
तुरंत हाथ सैनिटाइजर लगाएं।
लॉकडाउन में बाहर न जाएं,
ऑनलाइन सब कार्य निपटाएं।
हुआ जरूरी यदि कहीं पर जाना।
तो कोविड गाइडलाइन अपनाना।
खानपान में तो अति सावधानी,
अच्छे स्वास्थ्य हेतु है अपनानी।

श्यामनाराण - यह तो बहुत ही सुन्दर कविता है। इससे तो लोगों को काफी जानकारी भी मिलती है। यह सुन करके तो हमें भी अपनी कविता सुनाने का मन कर रहा है।

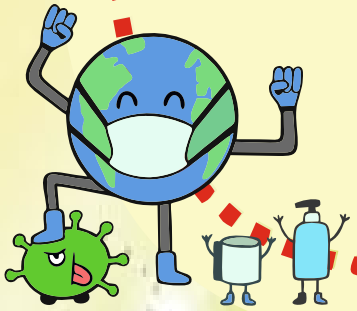

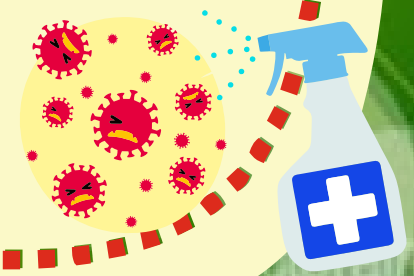

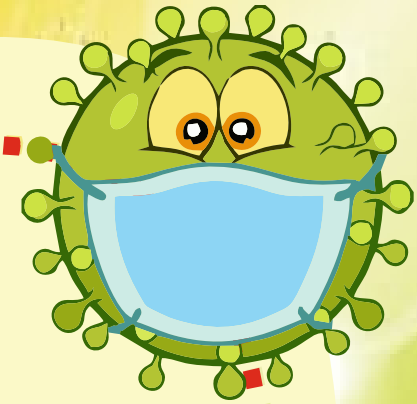

रामबुझ - क्या कहा! आप कोई कविता लिखे हैं क्या ?

श्यामनाराण - हॉ भई। बात यह है कि एक दिन हमसे करोना से भेंट हो गई,
फिर उससे कुछ बात हुई। उसी पर हमने यह कविता लिख डाली।

रामबुझ - अच्छा ! तो करोना से भेंट हुई तो क्या बातचीत हुई ?
उसे हमें सुनाइये।

श्यामनाराण -तो इस कविता को हम अब आप को सुना रहे हैं।
इसका शीर्षक है - **'करोना से भेंट'**

मिला करोना राह में मुझसे, करना चाहा बात।
मैं बोला - तुम दूर ही रहना, न आओ मेरे पास।
वह बोला- तुम मास्क हो पहने, फिर क्यों हो ऐसे डरते ?
मैं बोला -सैनीटाइजर भी है,पर सावधानी तो हम हैं करते।
वह उत्सुक होकर फिर पूछा- और उपाय क्या करते हो ?
मैं बोला- सूची है लंबी, क्या तुम सब सुन सकते हो ?
'हॉ' में वह फिर सिर को हिलाया, बोला, मुझे सब जानना है।
वही जान करके ही तो फिर, आगे का रास्ता बनाना है।
तो मैंने फिर उसे बताया- हम खानपान में रखते खूब ध्यान।
लेते हैं हम उचित विटामिन, रखते हैं इन सबका ज्ञान।
समय-समय पर शोध से, जो कुछ बातें सामने आती हैं।
उसके अनुसार कार्य हम करते, वही हमें तो भाती हैं।
यह बातें सुन हताश करोना, हो गया बहुत उदास।
कहा- लग रहा नहीं गुजारा, मेरा यहॉ किसी के पास।

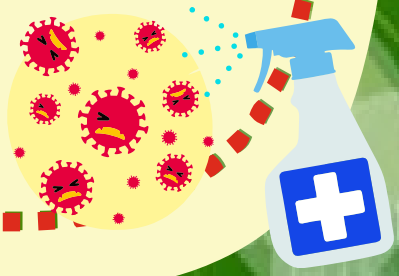

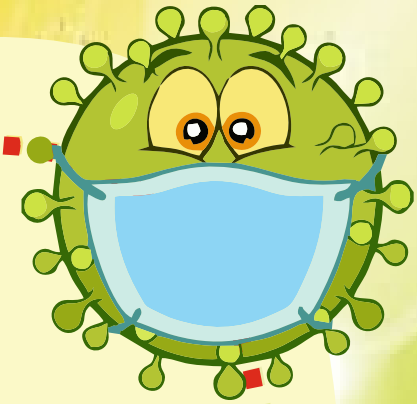

भग्गु - जब तोहन लोगन आपन आपन कविता सुनावत हवा तब त हम भी आपन भोजपुरी कविता सुनाइब। फिर तोहन लोगन के आपन गुन तेखाइब। हम करोना के बारे में बहुत कुछ सुनत रहनी। फिर एही पर यह कविता बनौनी। अब आप सब लोगन के बीच में हम एके सुनावत हई। एकर नाम हवै-

'करोना वायरस'

बहुत लोगन क जान ई लेहले।
कउनो केहू पर रहम ना कईले।
एकरे खातिर मास्क हवै जरूरी।
लोग रहे आपस में बना के दूरी
समय समय पर हाथ के धोवैं।
काढ़ा पीये, अउर सबके पिलावै।
तनिको ढील न दे केहू भाई।
नहीं तो आफत जान पर आई।
कफ, खांसी, बुखार यदि आईल।
तब त उचित भईल जॉच कराईल।
अगर जॉच पॉजिटिव निकलल।
तब त जरूरी क्वॉरेंटाइन हो गयल।
कोविद टीका अब त भइल जरूरी।
एके लगवावल सब क ह मजबूरी।
उचित खान-पान क दिहल धियान।
भयल जरूरी सही रखल सब गियान।

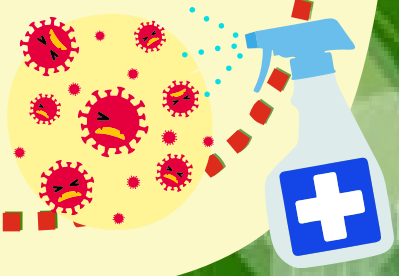

बॉके बिहारी - त हमहूँ एक ठे गीत आप लोन के सुनाइब और ओही के माध्यम से सब कुछ बताईब।

रामबुझ- अरे भैया! ए समय करोना क बीमारी चलल बाय। तोहरो कविता में उहै सब बात होवै के चाही।

बॉके बिहारी - हमरे कविता में उहै सब बात बतावल गयल हवै, जवन कि करौना में जानल जरूरी हवै।

रामबुझ- तब त ओके जरूर सुनावा।

बॉके बिहारी - ला सुना हमरे कविता का शीर्षक बाय-

'करोना का सामना'

बहुत तेज से चलल बाय आंधी।
गईने बिछड़ बहुत से साथी।
बाय जरूरत देहले क ध्यान।
नहीं त कोविद ले लेत बाय जान।
एहर ओहर न घूमा बेकार।
मना करैं डाक्टर अउर सरकार।
अब ना कउनो आलस दिखावा।
लक्षन जो करोना क पावा।
ओकर जाके जरूर जॉच करावा।
सही बात ही अब सबके बतावा।
एहर ओहर के भरम में न आवा।
सही सुना और सही बात बतावा।
बहुत लोग जो धियान् न देहने।
ऊ त फिर बहुतै परेशान भइने।
सही बात क रखीहा गियान।
ना होइबा कोविड से परिशान।

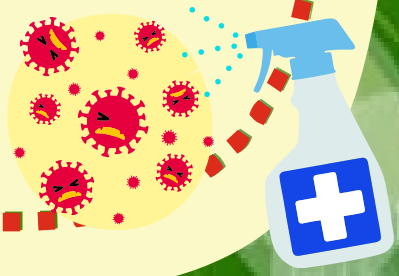

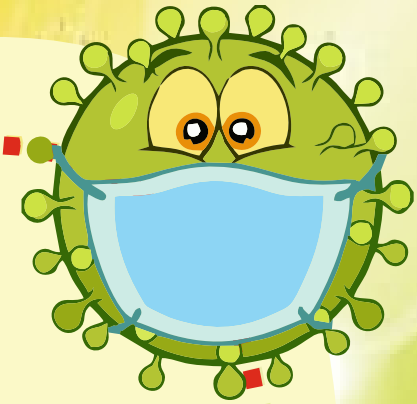

रामजीत - तोहार कवित त बहुत ही निम्मन रहल हवै ।
एमन बहुत ही सुन्दर ढंग से बात बतावल हवै। त चला एक कविता हमहुँ सुना देत हई।

बॉके बिहारी - अरे वाह! एसे सुन्दर बात अउर का होई।

रामजीत - देखा हमार एक सीख हउवै।

बॉके बिहारी - कवन सीख हवे भैया तोहार।

रामजीत - एके हम ए तरह ना बताइब ।
सब बातीन के गा के सुनाइब।

रामजीत - हमरे कविता क शीर्षक हवे-

करोना में सावधानी

अगर कभी भी भेंट में मिले,
कहीं केहु साथी या व्यवहारी।
दूर ही से अब उन्हे करा नमस्ते।
अबही त रखा एइसन ही यारी।
जबले करोना क आशंका हउवै।
न मिलिहा तब तक गले केहु से।
एम्मन डर संक्रमण क हउवै।
करिहा हाथ जोड़ नमस्ते दूर से।
अभिवादन में पास केहु आवै।
गले मिले अउर हाथ मिलावै।

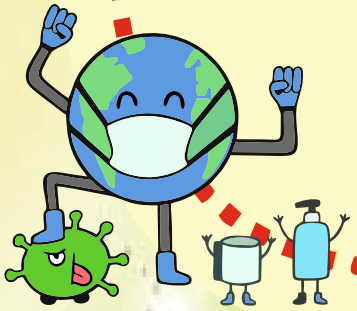

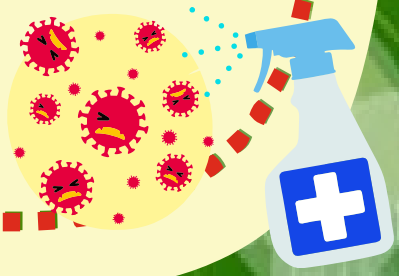

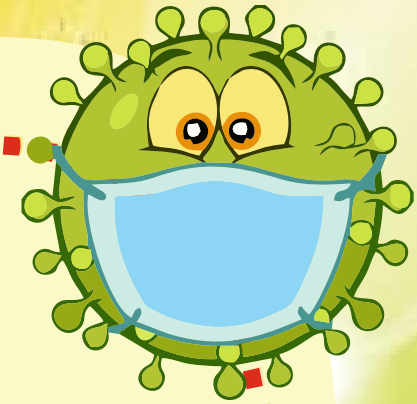

अगर संक्रमित उहो हउवै ।
रोग दूसर के भी हो जावै।
इसीलिए ई धियान में रखिहा।
हाथ जोड़ के नमस्ते करीहा।
बस इहै सुरक्षा दे कोविद से।
हंसत अउर गावत तू रहीहा।
बातचीत जब करीहा केहु से।
समुचित दूरी बना के रहीहा।
अब ना जैइहा पास केहु के ।
ए बाती क धियान तू दीहा।

भग्गु -इहो कविता बहुत अच्छी बाय। अब नगीना तू ही रह गयल बाटा जे कि कविता न सुनौले। त एक कविता तूहूँ सुना दा।

नगीना - हाँ! हाँ! हमहू इहै सोचत रहनी है।
त ला एक कविता सुना , इ करोना टीका पर हवे। एकर शीर्षक हवे

करोना क टीका क डर

हम जो लोगन के एक कहानी बतावत हई।
इ कहानी रामजियावन के बारे में हवै।

अन्य लोग- सुनावा, सुनावा!

नगीना - जब से सुनन रामजियावन।
कोविड क टीका बाजार में आईल,
बहुत लोग अस्पताल में जा के
ई टीका अपने के लगवाइल ।

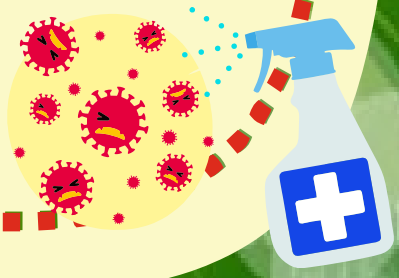

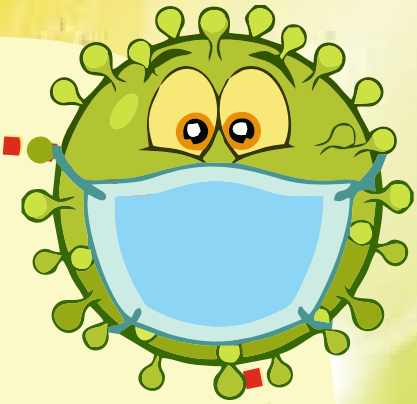

तब से उहो अपने मन में सोचैं ।
कि अब ई टीका लेई लगाय।
पर मन में कई संकोच के कारण।
टीका लगवावे उ ना जाय।
मन में हरदम उलझन रहै,
कैसे कहाँ अस्पताल हम जाइब।
अगर कहीं कुछ बिगड़ गयल त,
फिर ओके कैसे ठीक कराइब।
एही सब उधेड़ बुन में फिर त,
एक एक दिन अब बीतल जाय।
राम जियावन क कोविड टीका,
लगातार टलटै ही जाय।
तबै भेंट भईल राम जियावन क,
उनके अपने डाक्टर से।
उन्है बतौने आपन उलझन,
एक एक बात पूरा मन से।
कुल बात जब डाक्टर सुनन,
तब उनके ठीक से समझौन।
इ सारा डर मन क हउवै,।
रखा दूर भरम, डाक्टर कहन।
अबै करावा टीका पंजीकरण ।
तू कोविड पोर्टल पर जाके।
कोविड टीका में अब देर करा न ।
मिली सुरक्षा उ टीका लगा के।
भयल दूर फिर उनके शंका,
मिलल डाक्टर से सही ज्ञान।
जरूर लगवाइब कोविड टीका।
मन में लेहने बात इ ठान।

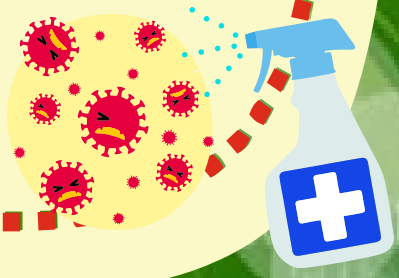

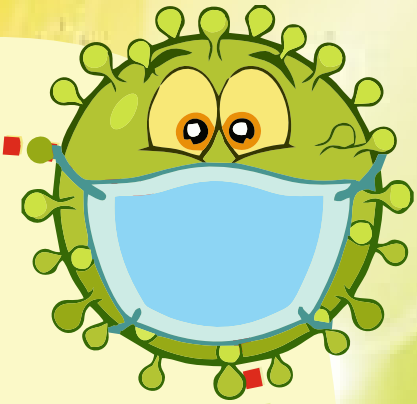

भयल पंजीकरण टीका खातिर।
फिर टीका केन्द्र पर उ गइनै।
वहाँ पर उनके टीका लागल।
खुश हो के फिर घर पर अइनै।

भग्गु -त आज त बहुत कवितई हो गयल। अब लोगन के एपर गुने के चाही, तबै करोना से बचाव होई।

अन्य सभी - हाँ हाँ सही बात हवे। सब लोग जरूर गुनिहै।
भग्गु- तो फिर सबके राम राम। फिर मिलन जाई ।

अन्य सभी -राम राम । भइया राम राम।

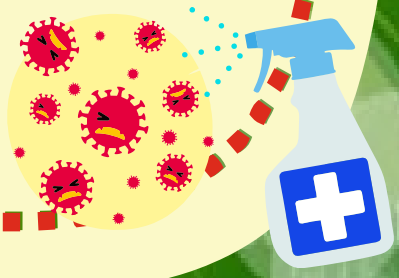

करोना क्लास

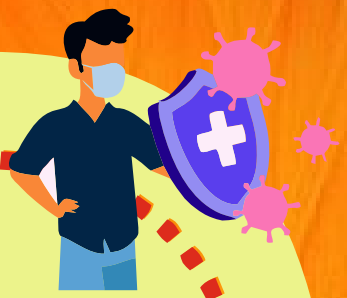

कक्षा का एक दृश्य है। कक्षा में सभी छात्र दूर दूर बैठे हुए हैं और मास्टरजी उन्हे बताते हैं कि आज उनको करोना के बारे में जानकारी दी जायेगी ।

मास्टरजी - बच्चों! आप सब को मालूम है कि करोना.....।

(तभी एक छात्र में उन्हे टोक देता है और खुद ही जोर जोर से जल्दी जल्दी बोलने लगता है।)

एक छात्र - जी मास्टरजी! एक बहुत ही भयानक रोग है। यह खाँसने छींकने, संक्रमित व्यक्ति या वस्तु को छूने से एक आदमी से दूसरे आदमी में फैलता है। इससे बचने के लिए मास्क लगाना चाहिए। बिल्कुल ठीक जैसे कि आप लगाये हुए हैं। हाथ में सैनीटाइजर लगाना चाहिए और एक दूसरे से दो मीटर दूरी पर रहना चाहिए । अब मास्टर जी आगे बताइये।

(मास्टर जी चौंक जाते है और वह कुछ कहने ही वाले होते है कि तभी दूसरा छात्र बोलने लगता है)

रामू - मास्टर जी! मास्टरजी ! इसने कई बातें गलत बतायी है। एक दूसरे से दूरी दो मीटर नही, दो गज होती है।

लोटन - नही मास्टरजी ! यह गलत बता रहा है। यह दूरी दो लोगों के बीच छः फीट होनी चाहिए। तीन फीट एक आदमी के लिए और तीन फीट दूसरे आदमी के लिए।

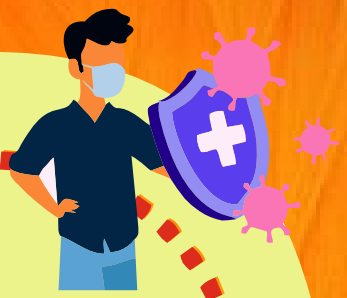

रामू - और जब तीन लोग रहेगें, तब कितनी दूरी होगी।

लोटन - तब तो यह दूरी तीन तिरके नौ फीट हो जायेगी।

मास्टर जी - (जोर से डॉटते हुए)चुप! यह क्लास इसीलिए लगायी गयी है, क्योकि तुम सब आधी अधूरी जानकारी लेकर बीमारी को फैलाते रहते हो।

लोटन - साहब जी! हमने नही फैलाया। लोग हमारे ऊपर फैला दिये थें। डाक्टर साहब जी हमको यही बताये थे कि तुम जहाँ गये थे, वहाँ पहले से करोना फैला था और इसी से तुम्हे हो गये ।

मास्टरजी - तो मास्क नही लगाये थे क्या ?

मगरूँ - साहब जी! मास्क लगाये नही थे, लटकाये थे।

मास्टर - कहाँ लटकाये थे ?

रामू - गले में लटकाये थे ।

गोलू - गले में नही कान में लटकाये थे।

मास्टरजी - वह गले में लटकाने के लिए है कि नाक को ढकने के लिए है।

रामू जी - साहबजी! मास्क मुँह को भी ढकने के लिए है। मास्क से नाक, मुँह दोनों ढकना है

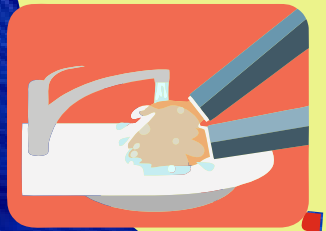

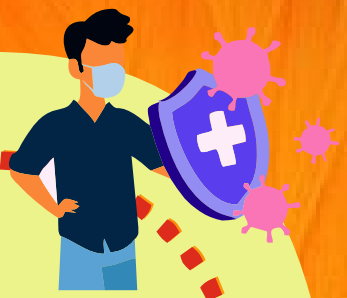

लोटन - साहब! नाक, मुँह दोनो ढके थे।

मास्टरजी - तो फिर क्या हो गया ?

मॅगरू - रास्ते में एक जगह चेकिंग की जा रही थी। दरोगाजी ने चेहरा मिलाने के लिए मास्क को जोर से खींच दिया। फिर उसकी डोर ढीली हो गयीं।

मास्टर जी - उसके बाद कहीं गिर गया, यही न। बहाने खूब बनाते हो।

मास्टरजी - आज हम तुम्हे यह बतायेंग कि कोविड में क्यों एक दूसरे से दूरी बना करके रखते हैं।

गोलू - जी मास्टरजी! क्योकि करोना दो गज से ज्यादा नही कूद पाता है।

मॅगरू - करोना कूदता नही है। उड़ नही पाता हैं।

मास्टरजी - अरे करोना कूदता, उड़ता नही है

गोलू - हॉ मास्टरजी। कोरोना खुद नही उड़ता है। आप जितना जोर से खॉसेगे और छींकेंगे, वह उतना ही अधिक दूर तक चला जाता है।

मास्टर जी - सही कहा।

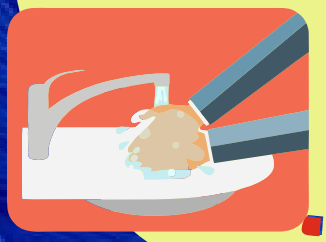

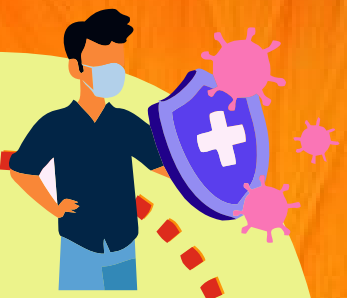

गोलू - इसीलिए तो हम कहते हैं, कि जब छिंकना हो तो, धीरे से छीकों या मत छीकों।

मॅगरू- क्यों नही छिंकेगें ?

मास्टरजी - अरे छींकने से कोई मना नही कर रहा है। हॉ, छींकते समय नाक मुँह पर टिसू पेपर लगा लीजिए।

(तभी मास्टर जी स्वयं जोर से छीकतें है और छीकते समय रूमाल का इस्तेमाल करते है।)

मास्टरजी - चलो अच्छा ! अब यह भी जान लो कि साफ सफाई बहुत जरूरी है।

गोलू - हॉ मास्टर जी ! हमें अपने आस पास हमेशा साफ सुथरा रखना चाहिए। और खुद भी साफ रहना चाहिए।

मॅगरू - जब अपने आस पास हमेंशा साफ सुथरा रखेगें तो क्या खुद गन्दा रहेंगे।

मास्टरजी - यही बात तो समझा रहे हैं कि लोगों को साफ सुथरा रहना चाहिए। कोविड के दौरान यदि कही जाये -

गोलू - (बीच में बोलते हुए) तो घर वापस आ करके कपड़े को तुरन्त धो देते हैं।

मगरूॅ- अरे धोते है या फिर सेनीटाइज भी कर देते हैं।

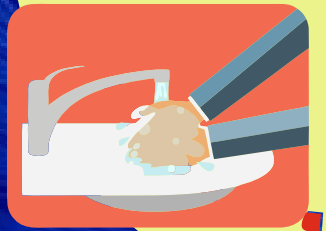

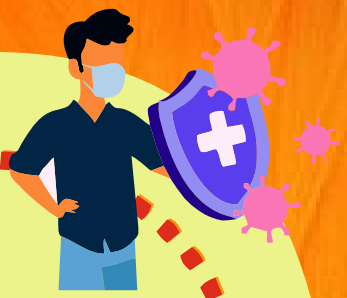

मास्टर जी - देखों! सैनीटाइजर तो हमेशा अपने साथ लिए रहना चाहिए।

गोलू (बीच में बोले हुए) हॉ मास्टरजी! जब कभी कोई अजनबी वस्तु छू जाये तो फिर उसे सैनीटाइज कर देते हैं। कहीं पर बैठने से पहले भी सेनीटाइज कर देते हैं।

मास्टर जी - गोलू ! तुम्हे तो सब बात मालूम है!

गोलू - हॉ साहब जी ! हमारे बगल में डाक्टर साहेब रहते है। वह हम सबको ये बात बताते रहते हैं। बिल्कुल फ्री में।

मास्टर जी - तब तो यह बहुत ही अच्छी बात है। तुम्हे कोविड के बारे में सब कुछ पता है। लेकिन एक बात यह भी जान लो कि कोविड में टीका भी लगवाना बहुत जरूरी है।

गोलू - हॉ, सर जी! लेकिन उसके पहले कोविड टीका लगवाने के लिए पंजीकरण भी कराया जाता है।

मास्टर जी -बिल्कुल सही बात तुमने कही

गोलू - हॉ! लेकिन कोविड टीका सही पोर्टल पर ही पंजीकरण कराना होता है । कई फर्जी काल भी आते हैं इसके लिए।

मॅगरू - तो फर्जी लोगों से बात करने की जरूरत ही क्या है ?

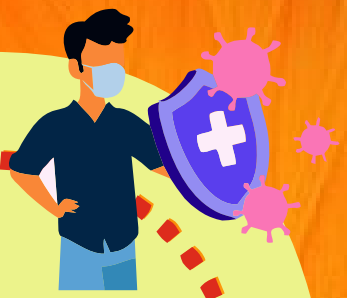

मास्टर जी -बिल्कुल सही बात बताये। फालतू काल कभी नही उठाना चाहिए। तो बच्चों ! आप सभी को अब यह बात समझ में आ गया कि कोविड से बचाव के लिए मास्क लगाना, दो गज दूरी सबसे बनाये रखना और सैनीटाइजर का उपयोग करना बहुत जरूरी है।

गोलू - और मास्टरजी! टीका लगवाना भी जरूरी है।

मास्टर जी- हाँ! हाँ! टीका लगवाना तो जरूरी है ही। वह तो सबसे जरूरी है।

मॅगरू-सही खान पान।

मास्टर जी - तो अब आज की कक्षा अब समाप्त होती है। अब अगली बार जब हम मिलेंगे तो फिर कोई और विषय लेंगें। तो बच्चों ! आज की कक्षा अब यहीं पर समाप्त होती है।

सभी बच्चे - मास्टर जी! नमस्कार!

मास्टर जी - नमस्कार !

नुक्कड़ पर कोविड चर्चा

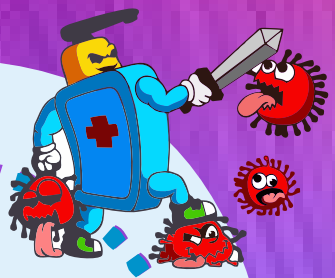

कथा वर्णन - यह स्क्रिप्ट एक नुक्कड़ नाटक के लिए लिखा गया है जो कि आम लोगों को सम्बोधित है। इसमें कुछ पात्रों के द्वारा कोविड बीमारी के विविध पहलूओं के बारे में बताया गया है। यह एक गली का दृश्य है जहाँ पर सभी लोग एकत्र हैं और उसी समय आम जनता एक बीच ये एक व्यक्ति निकल करके सामने आता है। और फिर वह लोगों को सम्बोधित करते हुए कहता है

सूत्रधार -
सुना! सुना! सब मोरे भैया !
तनि ध्यान दा अब कुछ बात हई कहवईया।
एतने दिन से जवन रोग बा फइलल।
बात कुछ जरूरी हो गयल बतावल।

पहला आदमी -
कवन बात तू हवा बतावत?
एके ले के हवा गाथा गावत।
हमकें भी एके तू समझावा।
सब बात के ठीक से सुनावा।

सूत्रधार - ए समय चलल बा एक बीमारी।
ओकर करै के बाय सब तैयारी।
एहर ओहर बेकार न घूमा।
बचले क उपाय सब सुना।

आदमी - अरे पहिले त ओकर नाव बतावा।
फिर बचले क उपाय समझावा।

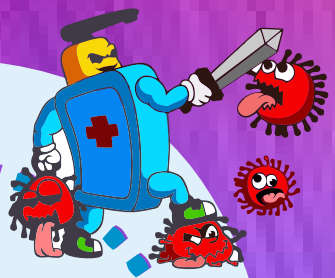

सूत्रधार - नाव त ओकर करोना हउवै।
जो एक निर्जीव कण कहैले।
किन्तु शरीर में जैइसे जाला।
आपन काम शुरू उ करेला।

आदमी - आपन काम शुरू इ कइलै।
ए बाती के ना ठीक से बतौलै।

सूत्रधार - भैया! नाक, मुँह से अन्दर जाके ।
श्वास नली में कुछ दिन बिता के।
वहाँ शान्त रूप से पड़ल रहेला।
कुछ दिन बाद काम शुरू करेला।

आदमी - अन्दर जाके काम शुरू करेला।
ओसे शरीर में फिर का होला ?

सुत्रधार - ओकरे बाद फेफड़ा में उ जाला।
वहाँ पर आपन संख्या बढ़ावैला।
एसे कुल परेशानी बढ़ जाला।
फिर कई तरह क दिक्कत आवेला।

आदमी - कवन कवन परेशानी फिर होला।
जेसे आदमी संकट में पड़ेला ।

सूत्रधार - पहिले त तनिक बुखार आवै।
कई बार फिर खाँसी भी आ जावै।
गंध,स्वाद भी सब मिट जाला।
फिर त कहीं कुछ न पता चलेला ।

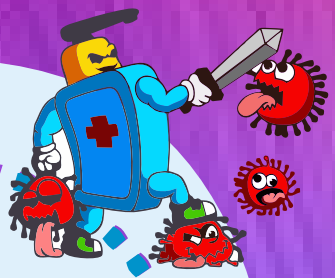

आदमी - इत बात त भयानक दिखत बा, अउरू कौनो कष्ट होत बा?

सूत्रधार - हॉ ! हॉ! और भी कठिनाई हवे।
सांस लेहले में दिकत हो जाला।
शरीर में आक्सीजन कम होवेला।
तब रोगी परेशान हो जाला।
अउर दूसर अंग भी शिथिल हो जाला।

आदमी- अगर आक्सीजन कम हो गयल।
कवन उपाय तुरंत बा अपनावल।

सूत्रधार - ए बाती के त डाक्टरे बतैहें।
अब्बे थोड़ी देर में अईहैं।

डाक्टर - (तभी डाक्टर का प्रवेश होत हवै। वह लोगन क बात सुनके करोना के बारे में बतावत हवैं)

सूत्रधार - जब आक्सीजन कम हो गयल, तब सब लोग का करिहैं।
उ देखा डॉक्टरजी आ गइने, सही बात त उहै सुनैहें।

(डाक्टर जी अपने ढंग से लोगन के जानकारी देत हवैं)

डाक्टर - एकर तुरंत बाय एक उपाय।
अपने पेट के बल लेट जाय।
पेट के नीचे तकिया रखिहा।
तनिक दबाव पेट पर बनैहा।
एसे आक्सीजन कुछ बढ़ जाला।
जरूरत प अस्पताल ले जायल जाला।

सूत्रधार - त इ उपाय के तू अपनावा, ऐसे आक्सीजन लेवल बढ़ावा।

एक आम आदमी - खइले पीयले में का बा सावधानी ,
इहो बात के अब तनि बखानी।

डाक्टर - घर क ही शुद्ध खाना अब खइहा।
पौष्टिक भोजन पर धियान तू दीहा।
लीहा विटामीन बी,सी,डी भरपूर।
आपन प्रतिरोधक क्षमता बढ़ावा जरूर।

(एक व्यक्ति रामराज का आगमन। वह करोना के बारे में पूछता है)

रामराज - नाम करोना सुन भैया मन में, बहुत डर अब लागेला,
अब तू इ उपाय भी बतावा, जौने से डर के बीमारी भागेला।

सूत्रधार - हाँ! हाँ! हम ओके भी बतावत हई -

एकर भी तरीका बाय।
बचले क उ करा उपाय।
एहर ओहर क बात न सुना, बस,
अपन काम करा मन के लगाय।

रामराज- बचले क का उपाय बाय।
एकरे बारे में तू अब बतावा।
सरल तरीका जो अब हौवे।
उहै के हम सभी के समझावा।

सूत्रधार - सभी तरीका सरल रहेला।
खाली सबक लापरवाही होले।
एकरे बारे में सही बात त।
अब डाक्टर साहब ही बोले ।

डाक्टर -(डाक्टर साहब सामने आकर अब एकरे बारे में बतावत हवैं)

हाँ !हाँ! उपाय त बहुत सरल बाय ।
ओके सबके अब हम बतावत हई।
एम्मन कुछ सावधानी धरे के बाय।
ओ सबके हम समझावत हई।

सूत्रधार - सुना ध्यान से अब सब बाति के।
एके अपनैहा अब तू घर जाके।

डाक्टर - एहर ओहर बेकार न घूमिहा।
बहुत जरूरत पर ही घर छोड़िहा।
पर घर छोड़िले के पहिले,
सब उपाय पर ध्यान तू दीहा।

रामराज- कवन बात बा ध्यान देहले क।
उहु क जरूरत बा बतौले क।

डाक्टर - नाक मुँह पर मास्क लगैहा।
बाहर ओके ना कभी हटैहा।
अगर कहीं भी भीड़ लगल बाय।
ओकरे लग्गे बिल्कुल ना जैहा।

अगर मिले केहु बाहर, भैया!
कब्बो न तू ओसे हाथ मिलैहा।
करीहा दूर से उनके नमस्ते।
दो गज दूर से बात तू करिहा।

आदमी - कवन फायदा मास्क करेला ?
जौने खातिर नाक,मुँह पर लगेला।

डाक्टर - मास्क रोके सब वायरस बाहर,
नही त उ नाक मुँह रास्ते जाय अन्दर।
श्वास नली, फिर फेफड़ा में बसकर।
फिर त करोना वहाँ मचावे बवंडर।

आदमी - आगे अउरू फिर का होला? जेसे सबके बचे के पड़ेला?

डाक्टर - फिर त खाँसी, बुखार भी आवै ।
देह में आक्सीजन की कमी बतावै।
सांस लेहले क हो जाये दिक्कत।
अउर कई परेशानी भी पावैं।

व्यक्ति - तब त इस सब बाय बहुत जरूरी, एके कईले क हवै मजबूरी,
अब हम जब घर से बाहर जइबै,नाक, मुँह मास्क जरूर लगइबे

सूत्रधार - अगर कभी मास्क घर पर भूल से छूट गईल।
त का कुछ उपाय बाय एकर दूसर कईल।

व्यक्ति - हाँ साहब, कभी एइसन भी हो सकेला।
एकरे खातिर का उपाय कोई करेला ?

डाक्टर - अगर साथ में एक हवै रुमाल।
त ओके ला तू मुँह पर लगाय।
करी इहो एक मास्क क काम ।
होई करोना क काम तमाम।

व्यक्ति - हम त रुमाल ना रखिला, हमरे पास बस गमछा ही रहेला।

Mाक्टर - गमछा भी एक मास्क क काम करे।
जरूरत पर ओके ही नाक मुँह पर धरें।

सूत्रधार - वैसे मास्क मुँह पर सदा लगावै।
बहुत रोग त वैसे भग जावैं।

अनाप शनाप क जो हवै वायरस,फिर उ सब ना मुँह में घुस पावै।
करै सुरक्षा यह शरीर क, सब लोग आपन स्वस्थ जीवन बितावैं।

व्यक्ति - बाहर हउवै मास्क जरूरी, व्यक्ति से दूरी हवै जरूरी।
अउरू कौनो बात ह साहब! जेकर कइले क ह मजबूरी।

डाक्टर - हाँ! हाँ!

एक बात बा अउर जरूरी।
ओकरे बिना बा रक्षा अधूरी।
एक शीशी सैनीटाइजर क रखिहा।
समय समय पर ओके लगैहा।

व्यक्ति - ओके कहाँ लगावै के बाय।
इहौ बात तू दा समझाय।

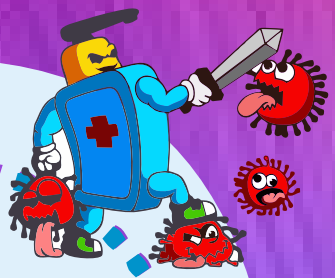

डाक्टर - जब कही भी तू बाहर जैहा।
सैनीटाइजर भी साथ में रखिहा।
जब भी हाथ अजनबी वस्तु छू जाय।
तब तो जरूर सेनीटाइजर लग जाय।

डाक्टर - अउर सुना!

जब भी घर वापस तू आवा,
पहिनल कपड़ा के धो दीहा।
हाथ, पैर के ठीक से धोवा,
सही ढंग से साबुन लगइहा।

सूत्रधार - तब त करोना से बचै के खातिर।
इहै सब बात ह बहुत जरूरी।
मास्क क त लगवही के बा।
बना के रखे के बा सबसे दूरी।
सैनीटाइजर, साबुन साथ में रखिहा।
समय समय पर ओके लगैहा।
इ सब ध्यान रखिहा सबही लोग।
तबै रहबा करोना से निरोग।

सूत्रधार - कई लोग कोरैंटाइन हो गयल।
जेके तनिको कोविड शंका भलय।

एक व्यक्ति - जब केहु कोरैंटाइन हो जाला।
एकर मतलब का फिर होला।

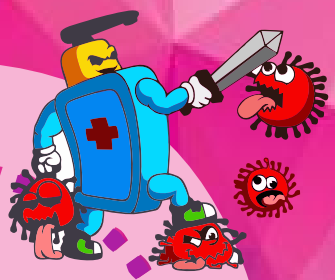

सूत्रधार - एकर मतलब कुछ दिन खातिर।
अलग अब घरही में रहे के बाय।
कोविड बीमारी से बचै के खातिर।
इहै सब उपाय अपनावै के बाय।

व्यक्ति - कितना दिन रहै क उपाय करिहे ?
एकरे बारे में अब कृपा कर बतैंहें।

सूत्रधार - चौदह दिन उ क्वेरेंटाइन पर जाला,
जेकरे में कुछ कोविड क आशंका होला।
ऐ दौरान उ समय से जागे और समय से सोवै।
आपन सही रूटीन बनावै, सभी दवाई समय से लेवै।

आखिर में एक बात अउर हवै।
ओके बतावल ह बहुत जरूरी।
एकरे बिन कोविड इलाज में।
पूरी तैयारी हवै अधूरी।
कोविड क त रोक थाम क सही
इलाज त बस इहै एक हवै ।
कोविड क पंजीकरण करवावैं ।
सही दिन पर जाके टीका लगवावैं।

(दर्शकों की तरफ सम्बोंधित करते हुए)

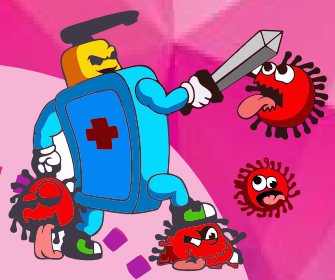

अगर बात जो कहल गयल है।
ओके सब लोग सही से मनीहैं।
न आई इ अब कोविड बीमारी।
सभी लोग फिर सुखी से रहीहैं।

(सब लोग मिल के बोले)

न आई इ अब कोविड बीमारी।
सभी लोग तब सुखी से रहीहैं।

कोविड मुक्तक

! पुलिस का डर
! फतेबहादुर डटे ड्यूटी पर
! डा० दुर्रानी करें इलाज
! प्रतिरोधक शक्ति बढ़ायें
! मास्टर जी की आनलाइन क्लास
! वैज्ञानिक साहनी का प्रयोग
! चन्दु की क्लास
! नर्स मीना
! मरीज रामू
! राम लाल की दुकान
! करोना के लक्षण
! लॉक डाउन
! श्यामलाल जी आनलाइन क्लास
! योग का महत्व
! कालू कुत्ता का भ्रम
! रामविजय की दुकान पर कोविड पालन
! कोविड का शिविर

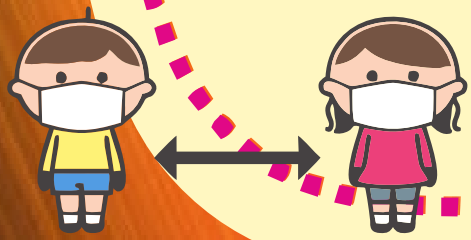

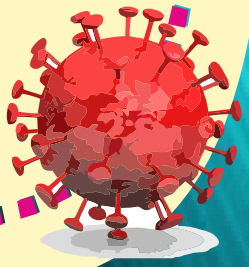

पुलिस का डर

खड़ी पुलिस ह बीच सड़क पर।
डंडा पटक उ देखावै आपन डर।
देख ओके बिन मास्क क अदमी।
सड़क पर भागें इधर उधर।

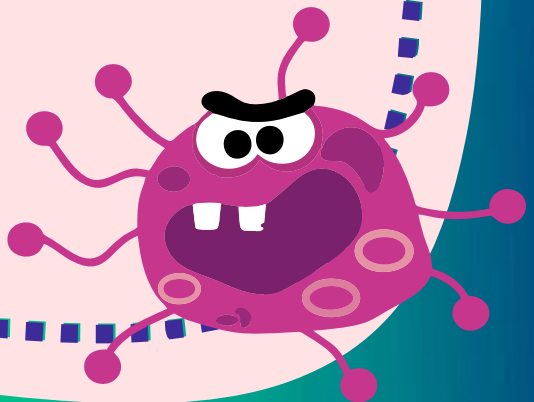

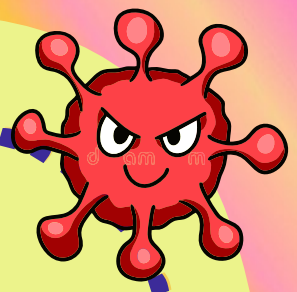

फतेबहादुर डटे ड्यूटी पर

फते बहादुर चौराहे पर, रखवाली खातिर बिल्कुल हवैं तैयार।
जे केहु बिन मास्क क मिले, वसूलें जुर्माना में रूपया हर बार।
एक एक करके जब कई लोगन क, जुर्माना रसीद कट गईल।
मास्क लगौले क जनजागरण, जनता में फिर जोर से भईल।

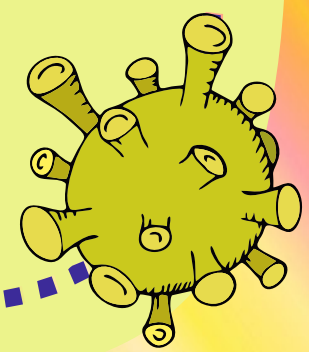

डा० दुर्रानी करें इलाज

डाक्टर दुर्रानी अपने क्लिनिक पर सब मरीजन के समझावें।
बहुत भयानक कोविड बीमारी, ओकरे बारे में उ बतावैं।
लगा के रखिहा मास्क के हरदम, जब भी बाहर कभी तू जैहा।
बना के रखिहा सबसे दूरी, सैनीटाइजर समय पर लगैहा।
खान पान क भी बात उ लोगन के लगातार बतावें।
कोविड क बचाव क उपाय, सबहीन के उ हरदम दोहरावैं।

प्रतिरोधक शक्ति बढ़ायें

बहुत जरूरी पौष्टिक भोजन।
इ प्रतिरोधक शक्ति बढ़ावै।
जे केहु एके अपनावै ।
वह तो कोविड से बच जावै।

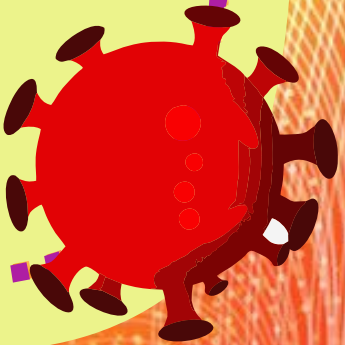

मास्टर जी की आनलाइन क्लास

मास्टर जी क कौनो क्लास, जब आनलाइन लागैला।
ओकरे पहिला कोविड क चर्चा, एक बार जरूर छिड़ेला।
लइकन के सब इ बात समझावैं, तनिको केहु जे लापरवाही करेला।
तब त कोराना न करे मुरौवत, ओके त उ तुरैन्ते पकड़ेला।

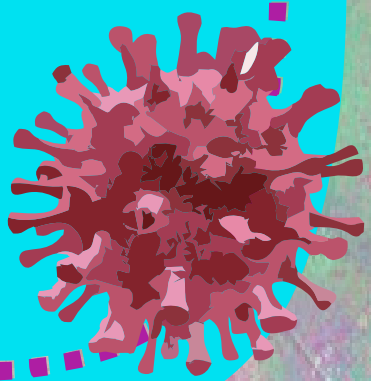

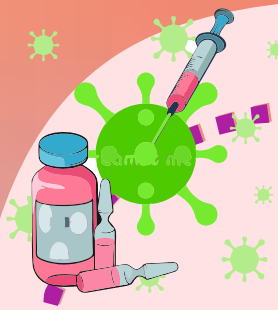

वैज्ञानिक साहनी का प्रयोग

वैज्ञानिक साहनी दिन रात, करोना पर प्रयोग करैन।
कइसे बनै प्रभावी टीका, इ सब बाती के उ जॉचैन।
कई तरह क दवा बनावैं, टीका क उपाय अजमावैं।
रात दिन जब किये परिश्रम,हो सफल कोविड टीका के बनावै।

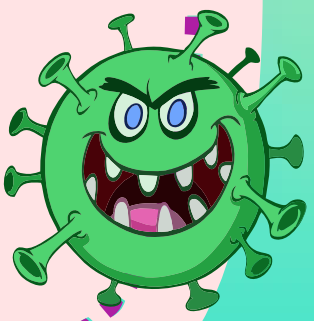

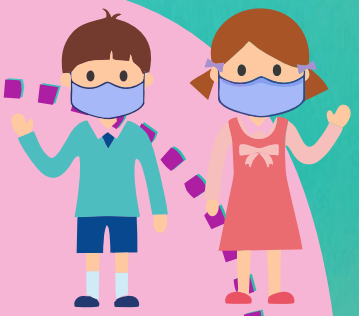

चन्दु की क्लास

जब से करोना क चलल बीमारी ,
बन्द भईल सब कालेज स्कूल।
आनलाइन ही सब क्लास चले अब,
चन्दु करै ओ सबके भरपूर।

मोबाइल के चार्ज करैन।
ओपर आपन क्लास करैन।
जहाँ कहीं भी समझ न आवै।
तुरन्त गुरूजी से सवाल करैन।

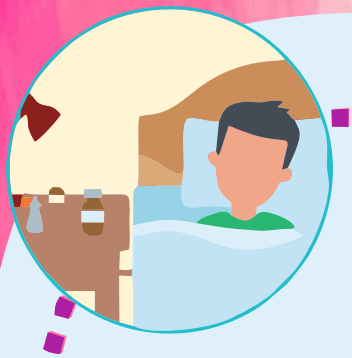

नर्स मीना

बहुत मनोयोग से सभी मरीज क सेवा ।
सुबह शाम मीना जी निभायें।
जो भी पीड़ित है कोविड से।
उसको सब उचित उपाय बतायें।

सब मरीज उनक हवैं कायल।
उनके खूब इज्जत करैन।
मीना जी जो बात बतावैं।
ओ सबके उ मानैन।

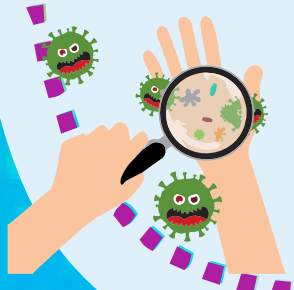

मरीज रामू

बार बार ओ घरी के कोसें।
जौने में बाजार उ गइने।
ध्यान न देहने सेनेटाइजर, मास्क का।
कोराना के संग ले अइने।

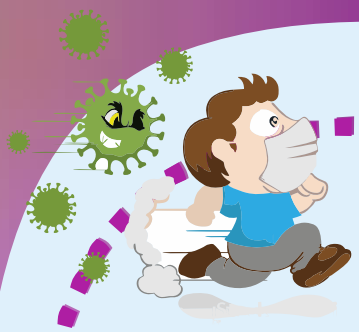

राम लाल की दुकान

जब से चलल बाय कोविड बीमारी।
रामलाल क दुकान क बिकीरि बा बढ़ल।
हल्दी, दालचीनी, लौग, काली मिर्च सबही,
काढ़ा खातिर सब लोग अपनावल।

करोना के लक्षण

लगातार जब खॉसी आवै।
शरीर में बुखार चढ़ जावै।
सांस के लेहेले में हो तकलीफ।
कोविड शंका में जॉच करावैं।

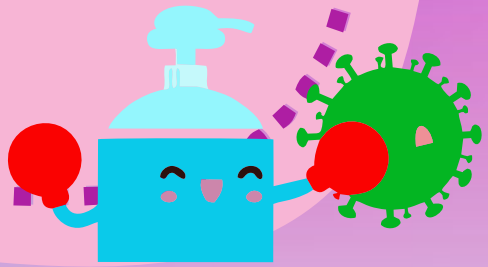

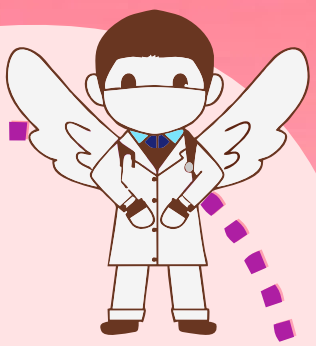

लॉक डाउन

लॉक डाउन से शोर घट गयल।
गाड़ी मोटर क चलल बन्द हो गयल।
आसमान में तारा अब दिख जाय।
जब से ई लॉकडाउन लगल बाय।

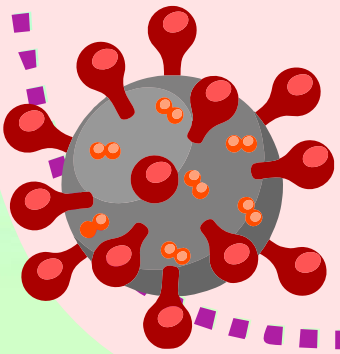

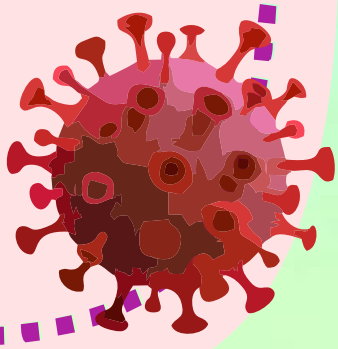

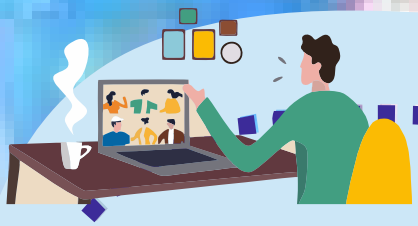

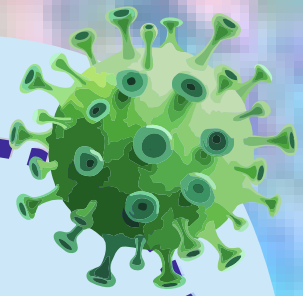

श्यामलाल जी आनलाइन क्लास

लॉकडाउन में स्कूल बन्द भयल।
आनलाइन क्लास शुरु हो गयल।
रामलाल जी सब लइकन के पढ़ावें।
जो समझ न आवै, उ सब मोबाइल पर बतावैं।

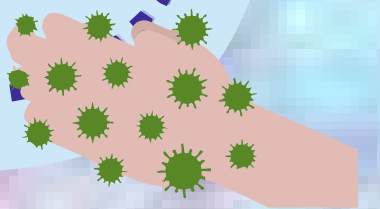

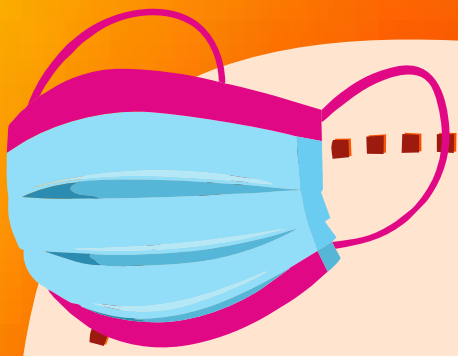

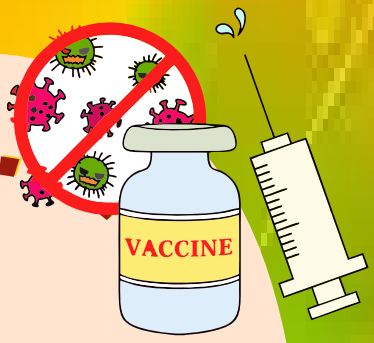

योग का महत्व

योग महत्व अब समझ में आयल।
जब से सांस की क समस्या भयल।
सुबह शाम अब एके अपनावै।
कोविड से बचले क यह यह उपाये बतावैं।

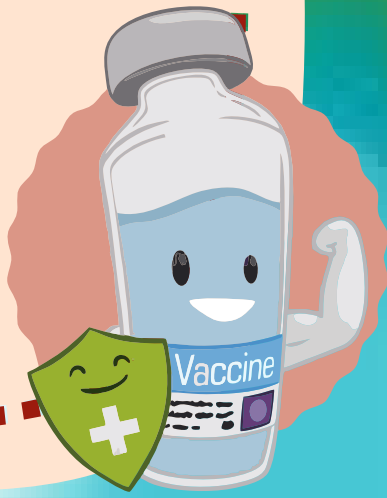

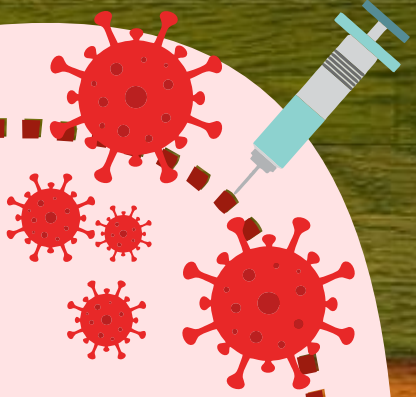

कालू कुत्ता का भ्रम

कोविड काल में कालू कुत्ता के
कई तरह क भरम हो गयल।
कहाँ पर भूकें, कितना भूकें,
एके ले दुविधा में पड़ गयल।
सबही लोग ह मास्क लगौले।
सही गलत क ध्यान न कर पावै।
जे परिचित ह ओके भौंके।
अपरिचित से प्रेम दिखावैं।

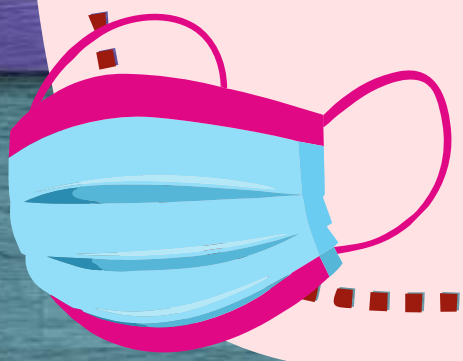

रामविजय की दुकान पर कोविड पालन

श्यामलाल की दुकान पर ग्राहक लगातार ही आवैं।
सब ग्राहक लोग दूर दूर खड़ा हों, इ बात के उ बतावै।
जे ना माने कहना उनक, ओके उ ढंग से समझावैं।
कोविड सुरक्षा क बात हवै, इ बात बार बार उ दोहरावै।

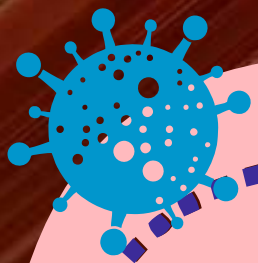

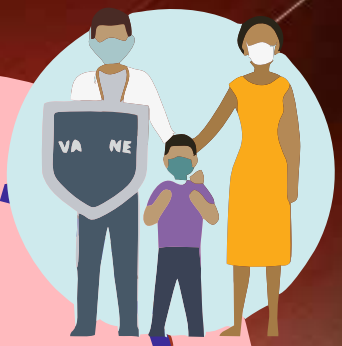

कोविड शिविर

लगल मोहल्ला में शिविर कोविड का।
सभी लोग अब उहाँ पर आवै।
रहल पिछड़ल टीका में जे केहु।
ओ सबन के अब टीका लग जावै।

डॉ अरविंद कुमार सिंह, वर्तमान में- असिस्टेंट प्रोफेसर (जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ);
पूर्व में -असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी - पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान , छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ,(2004 से 2018 तक);

शिक्षा- भौतिकी विषय में बीएससी ऑनर्स ,एमजेएमसी , पत्रकारिता और जनसंचार विषय में पीएचडी; संपूर्ण उच्च शिक्षा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से।विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की यूजीसी नेट एवं जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ-साथ यूजीसी जेआरएफ एवं एसआरएफ फैलोशिप प्राप्त किया। आरंभ में दैनिक जागरण (वाराणसी) में कई वर्षों तक कार्य करने के पश्चात कुछ अन्य हिंदी एवं अंग्रेजी समाचार पत्रों में अल्पावधि के लिए कार्य किया।आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से विविध कार्यक्रमों में भागीदारी।१०० से भी अधिक शैक्षिक टीवी कार्यक्रमों के लिए स्क्रिप्ट लेखन, जिनका कि लखनऊ एवं दूरदर्शन एवं ज्ञानदर्शन चौनल से समय-समय पर प्रसारण किया गया।पूर्व में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से यूजीसी फेलो तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में विजिटिंग एवं लखनऊ विश्वविद्यालय में अतिथि प्रवक्ता के रूप में शिक्षण कार्य किया। विविध प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रमों में भागीदारी एवं व्याख्यान। शोध पत्रों में शोध लेख के अतिरिक्त विभिन्न समाचार पत्रों में लेखन कार्य।
लिखी गई पुस्तकें-वेब पत्रकारिता, वेब माध्यम- लेखन एवं पत्रकारिता, इंटरनेट एवं न्यू मीडिया टेक्नोलॉजी, सोशल मीडिया, सोशल- मीडिया- तकनीक एवं प्रभाव, रेडियो प्रोग्राम एवं प्रोडक्शन तकनीक, रेडियो मीडिया- कार्यक्रम प्रसारण टेक्नोलॉजी, रेडियो कार्यक्रम- लेखन एवं प्रसारण, रेडियो पत्रकारिता, फिल्म एवं टीवी स्क्रिप्ट लेखन।
अभी हाल में कोविड जागरूकता हेतु कोविड कविता, कोविड कहानी, कोविड नाटक, कोविड नारे एवं कोविड पहेली नाम से ई- बुक का लेखन कार्य
पुरस्कार- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान,लखनऊ द्वारा बाबू विष्णु राव पराड़कर पुरस्कार से सम्मानित